Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाईश-दूत
हजरत मुहम्मद
का
आदर्श सदाचरण

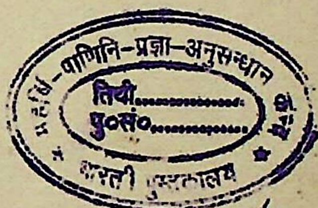
[महा ई]श-दूत

हज़रत मुहम्मद

का

आदर्श सदाचरण

> महा ईश-दूत ने इस तथ्य को स्पष्ट कर दिया कि ईश्वर एक, मनुष्य एक, और धर्म एक है और वह है ईश्वरीय विधान पर आधारित धर्म जिसमें वंश, वर्ण, देश, जाति के आधार पर न कोई बड़ा है न कोई छोटा, न कोई पवित्र है न कोई अपवित्र, प्रधानता है तो ईश्वर-भक्ति और सदाचार एवं सच्चरित्रता के आधार पर।


पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान
तिथी
पु०सं०
पुस्तकालय
549/3

प्रकाशकः—
इस्लामी साहित्य सदन
रामनगर, वाराणसी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

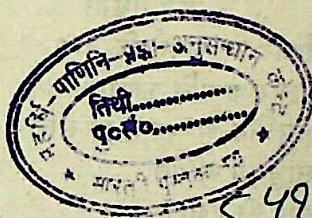
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाईशदूत

हज़रत मुहम्मद
का
आदर्श सदाचरण


पाणिनि-कन्या-अनुसन्धान
तिथी..............
पु० सं०..............
5 49

लेखक—

अबू मुहम्मद इमामुद्दीन

प्रकाशक—

इस्लामी साहित्य सदन

रामनगर, वाराणसी।

मूल्य ६० पैसे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

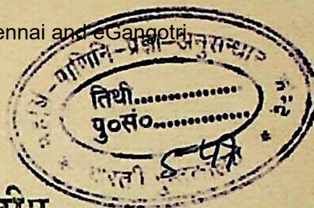
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

काशी मुद्रणालय, विश्वेश्वरगंज, वाराणसी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम

विषय परिचय

महा ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के जीवन चरित्र में यह हमारी दूसरी पुस्तक है, इससे पहले हम एक पुस्तक लिख चुके हैं जिसका नाम "महाईशदूत हज़रत मुहम्मद का जीवन परिचय" है उक्त पुस्तक में महा ईश दूत के देश, काल, परिवार, जन्म, पालन पोषण, युवा-वस्था, सचरित्रता, जीवन यापन, विवाह, सत्य की खोज, चिन्तन, सत्य प्राप्ति ईश दूतत्व, सत्य धर्मउपदेश, सत्यधर्म उपदेश मार्ग की कठिनाइयां, बाधायें, कष्ट, विपत्तियां, महाईश दूत की दृढ़ता, त्याग, कष्ट अपमान सहन, देश त्याग, मदीना निवास, शत्रु आक्रमण, प्रतिरक्षार्थयुद्ध, पूर्ण विजय, अपूर्व सफलता, अपूर्व धार्मिक, सामाजिक, तथा राजनीतिक, क्रांति, सत्य धर्म, पवित्र समाज, तथा आदर्श ईश्वरीय शासन की स्थापना का वर्णन है, । अर्थात् यह पुस्तक महा ईश दूत के अपूर्व जीवन का घटनात्मक परिचय है, इसलिए जब तक महा ईशदूत के आदर्श व्यक्तिगत जीवन अर्थात् ईश्वरभक्ति, साधुता, निःस्वार्थता, परलोक वादिता, सज्जनता, नम्रता दयालुता, क्षमाशीलता, दीनहीन प्रेम, न्याय-प्रियता आदि आदि आदर्श एवं अनुकरणीय आचार व्यवहार का परिचय न करा दिया जाय यह विषय पूर्ण नहीं हो सकता। यह दूसरी पुस्तक इसी उद्देश्य से उपस्थित की जा रही है, । हमें विश्वास है कि जिस सुरूचि पूर्ण भाव से पहली पुस्तक का अध्ययन किया गया है उसी भाव से इस दूसरी पुस्तक का भी अध्ययन किया जाएगा। साथ ही हमें यह भी विश्वास है कि शुद्ध हृदय विचार शील पाठक गण दोनों पुस्तकों का अध्ययन करके अवश्य ही इस परिणाम पर पहुँचेंगे कि महाईश दूत

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का जीवन कितना अपूर्व और अद्वितीय, कितना महान व और पवित्र, कितना पुणीत और कल्याणमय तथा कितना आदरणीय और अनुकरणीय था। पुस्तक में स्थान स्थान पर कुछ पारिभाषिक शब्द और वाक्य आते रहेंगे वह तात्पर्य समेत इस प्रकार हैं—

१—सहाबी—महा ईश दूत के सहचर गण को कहते हैं जो महा ईश दूत के पश्चात सब से अधिक आदरणीय माने जाते हैं, 'अस्हाब' और 'सहाबा' इसी शब्द का बहुवचन हैं।

२—मुहाजिर—धर्म रक्षा के उद्देश्य से देश त्याग को 'हिजरत' कहते हैं, मुहाजिर का अर्थ है, धर्मरक्षार्थ देश त्याग करने वाला, 'मुहाजिर शब्द का बहु वचन 'मुहाजिरीन' है।

३—अंसार—इसका अर्थ है धर्म और धार्मिकों की सहायता करने वाले, यह मदीना निवासी मुसलमानों की उपाधि है जिन्होंने मक्का त्याग करके मदीना आने वाले मुसलमानों और इस्लाम की तन मन धन से सहायता की।

४—सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम—यह वाक्य एक प्रार्थना है, जो महाईश दूत के नाम के साथ आता है इस का अर्थ है, अल्लाह उन को कृपा और शांति प्रदान करे। महा ईश दूत के शब्द के आगे (स०) इसी वाक्य का चिन्ह है।

५—रज़ियल्लाहु अन्हु,—यह भी प्रार्थना वाक्य है यह सहाबी के नाम के साथ आता है, इसका अर्थ है 'अल्लाह उनसे प्रसन्न हो'। सहाबियों के नाम के साथ (र०) इस वाक्य का चिन्ह है।

इस्लामी साहित्य सदन
रामनगर—बनारस

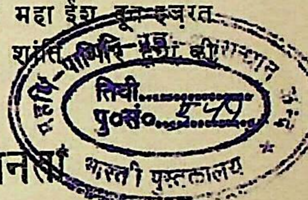
अबूमुहम्मदइमामुद्दीन
१-१-६६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम

हम सर्व प्रथम ईश्वर की स्तुति करते हैं जो सारी सृष्टि का कर्ता, सर्व जगत का पालनहार सर्व स्वामी, सर्व शासक तथा सर्व उपास्य है और जो अपनी सत्ता, गुण, कर्म एवं अधिकार में अद्वितीय है, जिसके अतिरिक्त कोई पूज्य तथा उपास्य नहीं है और हम ईश्वर से महा ईश दूत हजरत मुहम्मद तथा उनके सहाबियों के लिए सतत् शांति प्राप्ति हेतु याचना करते हैं।



महा ईश दूत की महानता

एक साधारण व्यक्ति जिसे कोई महानता प्राप्त हो न विशेषता न मान सम्मान, न धन धान्य न सुख विलास साधन न शक्ति अधिकार और उसका जीवन सरल साधारण और साधुता पूर्ण हो तो वह व्यक्ति कुछ अधिक आदरणीय और सराहनीय नहीं कहा जा सकता आदरणीय और सराहनीय व्यक्ति वही हो सकता है जो सब कुछ प्राप्त होते हुए भी सरल साधारण सचरित्र तथा साधुमय आदर्श जीवन व्यतीत करे। अतः महा ईश दूत के आचार व्यवहार के उपस्थित करने से पहले संक्षेप में यह दिखा देना आवश्यक है कि महाईश दूत को देश तथा समाज में कितनी महानता प्रतिष्ठा तथा श्रद्धा प्राप्त थी।

असीम प्रेम— एक व्यक्ति को मान सम्मान तो इस लिये भी प्राप्त हो जाता है कि वह धनवान हो या शक्ति और अधिकार रखता हो और लोग उसका मान सम्मान करने पर बाध्य हों, परन्तु यह मान सम्मान हृदय का नहीं होता केवल ऊपरी होता है वास्तविक मान सम्मान वह है जो हृदय के प्रेम और श्रद्धा पर आधारित हो और महाईश दूत को यह दोनों बातें उस समय से प्राप्त थीं जब आप सर्वथा अधिकार हीन निःसहाय और अत्याचार पीड़ित थे, आप जब तक मक्के में रहे आपकी यही अवस्था थी आप सुरक्षा और शांति के साथ ईश्वर की पूजा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

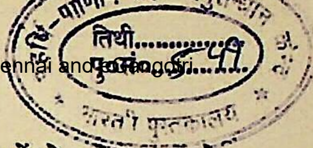
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपासना भी न कर पाते थे। एक दिन आप कावे में नमाज पढ़ रहे थे। कावे में मक्के के कई सरदार भी बैठे थे जो महा ईश दूत के कट्टर शत्रु थे। उनमें से एक ने जिस का नाम उत्वा था महाईश दूत के गले में मोटी चादर डालकर उसे ऐंठना आरम्भ किया ताकि आप का गला घुंट जाये।

महा ईश दूत के एक परम मित्र अनुयायी हज़रत अबूबक्र (रज़ि-यल्लाहुअन्ह) थे, उनको इस विपत्ति की सूचना मिली तो भागे हुए आए और कहा—तुम एक व्यक्ति की केवल इसलिये हत्या करना चाहते हो कि वह कहता है कि हमारा पूज्य केवल अल्लाह है। इस पर मक्के के सरदारों ने हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) को मारते मारते अधमुवा कर दिया उनके परिवार वालों को सूचना मिली तो वह भागे हुए आए और उनको अचेत अवस्था में घर उठा ले गए, अचेतना दूर होने पर आपको दूध दिया जाने लगा तो पीने से इन्कार कर दिया, कहा—जब तक यह न मालूम हो जाए कि महाईशदूत पर क्या बीती और वह कैसे हैं मैं खा पी नहीं सकता।" आपके परिवार वाले भी महाईश दूत के विरोधी थे उन्होंने क्रुद्ध होकर आपको छोड़ दिया हज़रत अबूबक्र की माता को उनसे सहानुभूति थी रात हुई तो वह एक स्त्री की सहायता से आपको महाईश दूत के पास ले गईं और जब आपने महाईश दूत को स्वस्थ अवस्था में देख लिया तो खाया पिया।

मक्का त्याग की रात्रि थी, हज़रत अबूबक्र से मक्का त्याग कर मदीना प्रस्थान का कार्य क्रम तय था, मक्का के शत्रु महा ईश दूत की हत्या करने के लिए नंगी तलवारें लिये घर का घेरा डाले हुए थे। महा ईश दूत ईश्वर की इच्छा में शत्रुओं से बच कर निकल गए और हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) को उन के घर से साथ लेकर मक्का की एक पहाड़ी गुफा में जिस का नाम ग़ारे सौर है छिप गए, ताकि मक्का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.



Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवासी आपको ढूँढ़ खोज कर निराश हो जायें तो आप गुफा से निकल कर यात्रा करें। गुफा में जगह जगह सूराख थे। हज़रतअबूबक्र (रजि०) ने सब को बन्द किया, एक सूराख को बन्द करने के लिये कुछ न मिला, वह सूराख खुला रह गया। महा ईश दूत हज़रत अबूबक्र (रजि०) की रान पर सर रख कर आराम कर रहे थे। खुले हुए सूराख से सांप ने मुंह निकाला, परन्तु हज़रत अबूबक्र (रजि०) ने महा ईश दूत को कष्ट देना उचित न समझा सूराख पर अपना पांव रख दिया, सांप ने काट लिया, फिर भी आप विचलित न हुए कि महा ईश दूत की निद्रा में बाधा पड़ जाएगी, जब पीड़ा असह्य हो उठी और आपके आंसू महा ईश दूत के गाल पर गिरे तो आपकी निद्रा भंग हो गई। रोने का कारण पूछा, और ज्ञात होने पर सांप के काटे हुए स्थान पर अपने पवित्र मुंह की राल लगा दी और ईश्वर की कृपा से सांप का विष दूर हो गया।

बद्र के युद्ध में महा ईश दूत तीर हाथ में लिये सैनिकों की पंक्ति सीधी कर रहे थे, एक सहाबी की छाती में जिनका नाम सवाद था तीर की नोक लग गई उन्होंने कहा—"ऐ अल्लाह के रसूल आप न्याय स्थापना के लिए आए हैं, मैं आप से न्याय के नाते बदला चाहता हूँ। महा ईश दूत तो सचमुच न्याय मूर्ति थे बोले—तुम अवश्य बदला लो। हज़रत सवाद ने कहा—मेरी छाती खुली हुई है आप भी अपनी छाती खोल दीजिए। महा ईश दूत ने छाती खोल दी, हज़रत सवाद ने विह्वल हो कर आप की छाती चूम ली। महाईश दूत ने कहा—सवाद, यह इस का कौन सा अवसर था? बोले—"हे अल्लाह के रसूल! युद्ध का क्षेत्र है शत्रु प्रबल है कौन जाने अपनी क्या गति हो? फिर इस श्रीमुख के दर्शन और इस पवित्र शरीर के छूने का शुभ अवसर मिले कि न मिले, इस विकट परिस्थिति में मेरी अंतिम आकांक्षा यही थी कि मैं एक बार इस पवित्र शरीर को चूम लूं।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उहुद के युद्ध ने बड़ा भयावह रुप धारण कर लिया था शत्रु चारों ओर से महा ईश पर टूट पड़े थे, आपने कहा—"मुझ पर कौन जान देता है ?" ज़ियाद बिन सकन (रजि०) पांच सहचरों को लेकर आगे बढ़े। और पांचों महा ईश दूत पर बलिदान हो गए। ज़ियादबिन सकन (रजि०) का शव महाईश दूत के निकट लाया गया तो कुछ जान बाकी थी। उन्होंने महाईश दूत के चरणों पर अपना मुख रख दिया और परलोक प्रस्थान कर गए। तनिक इस प्रेम का अनुमान कीजिए। अपने सहचरों से ऐसा प्रेम किस को मिला होगा।

महा ईश दूत पर चारों ओर से तीरों और तलवारों की वर्षा हो रही थी, एक योद्धा अबू दुजाना (रजि०) थे उन्होंने अपनी पीठ को महा ईश दूत के लिये ढाल बना लिया अब जो तीर आते थे उनकी पीठ पर आते थे। हज़रत तलहा (रजि०) नामक एक सहचर शत्रुओं की तलवारों को हाथ पर रोक रहे थे उनका एक हाथ कट कर गिर पड़ा।

इस युद्ध में बहुत से मुसलमान हताहत हुए, युद्ध समाप्त हुआ तो महा ईश दूत ने मदीना निवासी हज़रत साद बिन रबीअ अनसारी (रजि०) का पता लगाने के लिये हज़रत उबय्यि बिन काब को रण स्थल में भेजा हज़रत साद आहतों में पड़े मिले उनका अन्तिम समय था हज़रत उबय्यि बिन काब (रजि०) ने कहा—"किसी को कोई सन्देश देना हो तो दो, हज़रत साद बिन रबीअ (रजि०) को न अपनी पत्नी की चिंता थी न अपने पुत्र पुत्री की, न घर गृहस्थी की, उनको चिन्ता थी महा ईश दूत की। उन्होंने कहा—"अन्सार से कह देना, यदि उनके रहते हुए अल्लाह के रसूल को कोई कष्ट पहुँचा तो परलोक में ईश्वर के निकट उन का कोई उत्तर मान्य न होगा।"

इस युद्ध में मदीने की एक महिला के पिता भाई और पति मारे गए थे। जब सेना उहुद से मदीने को लौटी तो वह महिला मार्ग में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.



Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खड़ी एक एक एक व्यक्ति से महा ईश दूत के सम्बन्ध में पूछती थीं और उत्तर में उनके पिता भाई और पति के मारे जाने की सूचना मिलती थी, परन्तु उन का प्रश्न एक ही था कि अल्लाह के रसूल कैसे हैं ? जब उनको महाईश दूत के दर्शन हुए तो पुकार उठीं–आप सुरक्षित हैं तो हमें पिता, पति, भाई तथा किसी के मारे जाने का शोक नहीं है ।"

एक बार एक क्षेत्र के कुछ लोग मदीना आए जो थे तो इस्लाम विरोधी परन्तु उन्होंने मुसल्मान होकर महा ईश दूत से कहा एक दल इस्लाम की शिक्षा के लिए हमारे साथ कर दीजिये । आप ने अपने ७० सहाबियों का एक दल उनके साथ कर दिया, उन दुष्टों ने मुसल्मानों को अपने क्षेत्र में ले जाकर उनके साथ विश्वास घात किया । मुसलमान लड़ते हुए वीर गति को प्राप्त हुए, दो को उन्होंने शरण का वचन देने के पश्चात वन्दी बना लिया और उनको मक्के के शत्रुओं के हाथ हत्या के लिये वेच दिया । उनमें एक व्यक्ति हज़रत ज़ैद (रज़ि०) थे जिनको मक्के के सरदार सुफयान बिन उमय्या ने खरीदा था । हज़रत ज़ैद को वध स्थल पर खड़ा किया गया तो अबू सुफियान ने उनसे कहा—"क्या इस समय तुम्हारी यह इच्छा न होगी कि तुम्हारे स्थान पर मुहम्मद (स०) होते और तुम सुख से अपने घर में होते ?

हज़रत ज़ैद ने रोष भरे शब्दों में उत्तर दिया—खुदा की कसम मुझे तो इतना भी सह्य नहीं कि अल्लाह के रसूल के तलवे में कांटा चुभे और मैं घर में बैठा रहूँ ।"

सुरक्षित अवस्था में प्रेम प्रदर्शन सहज है परन्तु प्राण परीक्षा में प्रेम पर दृढ़ रहना सहज नहीं होता । महाईश दूत के सह[illegible] ने प्रेम का वह आदर्श संसार के सम्मुख उपस्थित किया कि ईसाई इतिहास कार गाडफ्रे हिगेन्स भी यह स्वीकार करने पर बाध्य हो गया कि—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ईसाई इसको याद रखें तो अच्छा हो कि मुहम्मद (स०) की शिक्षा ने अपने अनुयायियों में धर्म की वह उन्मत्तता उत्पन्न की जिस को ईसा (अलैहिस्सलाम) के आरंभिक अनुयायियों में खोजना व्यर्थ है जब ईसा (अलैहिस्सलाम) को फांसी पर ले जाया गया तो अनुयायी भाग गए, उनका धार्मिक उन्माद जाता रहा और वह अपने धर्म नेता को मृत्यु के पंजे में वंदी अवस्था में छोड़ कर भाग गए ···उनके विपरीत मुहम्मद (स०) के अनुयायी अपने अत्याचार पीड़ित पैग़म्बर के चारों ओर एकत्रित रहे और उनकी रक्षा में अपने प्राणों को जोखिम में डाल कर उनके समस्त शत्रुओं पर उनका अधिपत्य स्थापित कर दिया।"

सहाबा में यह असीम प्रेम अनायास ही उत्पन्न नहीं हो गया था उसका कारण महा ईश दूत का सत्य सौहार्द पूर्ण तथा स्नेह मय आचार व्यवहार था। इसका भी एक मनोहर दृश्य देख लीजिए। आप के एक सहाबी थे हज़रत ज़ाहिर (रज़ि) वह ग्राम निवासी थे, उनको महा ईश दूत से बड़ा प्रेम था वह आपके लिये प्रेम पूर्वक उपहार भेजा करते थे। आप को भी उनसे वैसा ही प्रेम था, आप कहा करते थे ज़ाहिर (रजि०) हमारे देहाती हैं और हम उनके शहरी हैं,। एक दिन की बात है हज़रत ज़ाहिर मदीने के बाज़ार में अपना सामान वेच रहे थे, महाईश दूत ने उनको देखा तो पीछे से जाकर उनको बाहों में जकड़ लिया, उनको मालूम न हुआ कि कौन है? कहा—कौन है? छोड़ दो।' साथ ही मुड़ कर पीछे देखा, धन्य भाग्य! महा ईश दूत हैं, फिर क्या था प्रेम से विह्वल हो उठे, बार-बार आपके सीने से लगे जाते थे, हृदय संतुष्ट ही न हो पाता था। तनिक ईश दूत की महिमा पर विचार कीजिए, एक देहातीमित्र से इतना प्रेम भाव! ऐसा ही प्रिय व्यवहार तो था महाईश दूत का अपने सहचरों के साथ, फिर कैसे न आप पर सहर्ष अपना सब कुछ उत्सर्ग करने में अपना सौभाग्य अनुभव करते!

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असीम श्रद्धा—उहुद के युद्ध में एक शत्रु के प्रहार से महा ईश दूत का चेहरा ज़ख्मी हो गया, और उससे रक्त बह निकला, महा ईश दूत के एक सहाबी हज़रत मालिक बिन सनान (रजि०) ने आगे बढ़ कर अपने मुंह से रक्त चूस लिया। कहा-ऐ अल्लाह के रसूल, मुझे यह उचित न जान पड़ा कि आप का पवित्र रक्त भूमि पर गिरे उसका अपमान हो। हज़रत मालिक बिन सनान (रजि०) इसी युद्ध में शहीद हो गये। एक बार महा ईश दूत मदीने से मक्के गए हुए थे नगर के बाहर एक स्थान अबतह है वहां चमड़े का एक खेमा लगा दिया गया था। महा ईश दूत उसी में ठहरे हुए थे उसी में आप ने वज़ू किया, हज़रत बिलाल जो मक्के में महाईश दूत के एक शत्रु सरदार के दास रह चुके थे और इस्लाम ग्रहण कर लेने के कारण हृदय विदारक कष्ट भोग चुके थे अब महा ईश दूत के घर के प्रबन्धक और आपके निकटवर्ती सेवक थे। आप के वज़ू का बचा हुआ पानी लिए हुए खेमे से बाहर निकले, महाईश दूत के सहाबी पानी देखकर दौड़े और प्रसाद स्वरूप पानी ले ले, कर अपने मुंह और सीने पर मलने लगे जिनको पानी न मिल सका उन्होंने दूसरों के हाथ से जो तरी मिली उसी को ले लिया ताकि प्रसाद से वंचित न रह जायें।

महाईश दूत का नियम था कि हर काम का आरंभ दायें ओर से किया करते थे। एक अवसर पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रजि०) महा ईश दूत के दायें ओर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रजि०) बायें बैठे थे। महा ईश दूत के लिये दूध लाया गया आपने थोड़ा पी कर हज़रत अब्दुल्लाह (रजि०) से कहा—हक़ तो तुम्हारा है परन्तु तुम चाहो तो ख़ालिद (रजि०) को दे दो, अब्दुल्लाह ने कहा—मैं आपका जूठा किसी को नहीं दे सकता।

हज़रत अनस (रजि०) महा ईश दूत के सेवक थे और उनके घर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाया करते थे। आपके पवित्र शरीर का जो पसीना होता उसको हज़रत अनस (रज़ि०) की माता एकत्रित करके अपने सुगन्ध में मिला लेतीं और बड़ी श्रद्धा से उसको सुरक्षित रखतीं।

एक बार एक पिता हीन बालक ने एक व्यक्ति पर खजूर के बाग़ का दावा किया उसका दावा सत्य सिद्ध न हो सका, महा ईश दूत तो न्यायी थे बालक के विरुद्ध निर्णय कर दिया, बालक रोने लगा, महाईश दूत न्यायी के साथ ही अति दयालु भी थे पिता हीन बालक के आंसू देख कर आपकी दया का स्रोत छलक गया, प्रतिवादी से कहा—निर्णय तो तुम्हारे ही पक्ष में है परन्तु बाग़ बालक को दे दो तो उसके बदले खुदा तुम को जन्नत में बाग़ देगा। प्रतिवादी इतना ज्ञान वान न था जो जन्नत के बाग़ के मूल्य को समझता वह आगा पीछा सोच कर रह गया। महाईश दूत की की सेवा में एक सहाबी अबू दहदाह उपस्थित थे जो आप से पूर्ण श्रद्धा रखते थे उनके पास इस बाग़ से भी अधिक मूल्य वान बाग़ था वह प्रतिवादी से मिले कहा—मेरा बाग़ तुम से भी अच्छा है तुम उसे ले लो, और अपना बाग़ मुझको दे दो, उस से सौदा तय हो गया। अबू दहदाह (रज़ि) ने महा ईश दूत की सेवा में उपस्थित होकर कहा—"ऐ अल्लाह के रसूल ! मैंने इस बाग़ को ख़रीद लिया है, यदि वह बाग़ इस पिता हीन बालक को दे दूँ तो क्या मुझको उस के बदले जन्नत में बाग़ मिलेगा ? आप ने फ़रमाया—हां मिलेगा। यह वचन पाकर उन्होंने बाग़ बालक को दे दिया।

एक बार एक देहाती मदीने में घोड़ा बेचने आया, महा ईश दूत ने घोड़ा ख़रीद लिया और उस देहाती को साथ लेकर घर की ओर चले किसी को पता न था कि आप इस घोड़े को खरीद चुके हैं। रास्ते में एक और व्यक्ति ने घोड़ा ख़रीदने की इच्छा प्रकट की और देहाती उस से दाम काम करने लगा।

महा ईश दूत ने कहा—तुम तो मुझसे घोड़ा बेच चुके हो। वह महा ईश दूत से परिचित न था और आप रहते भी थे एक साधारण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्ति के समान, उसने कहा—मैंने आप से कहां घोड़ा बेचा है ? क्या कोई इस का गवाह है ? इसी बीच एक सहाबी हज़रत खुज़ैमा वहां पहुँच गए थे, उन्होंने आगे बढ़ कर कहा—"मैं गवाही देता हूँ कि घोड़ा बिक चुका है। महा ईश दूत ने आश्चर्य से पूछा—'तुम वहां कहां थे जो गवाही दे रहे हो ?"

उन्होंने श्रद्धा पूर्ण भाव से उत्तर दिया—मैंने यह जान कर आप को ईश्वर दूत स्वीकार किया है कि आप सत्य वादी हैं आप ईश्वर के प्रति भी झूठ नहीं बोलते तो इस घोड़े की बिक्री के विषय में झूठ कैसे कह सकते हैं अवश्य घोड़ा बिक चुका है।

एक बार महा ईश दूत सर के बाल मुंडवा रहे थे। सहाबा ने देखा तो आपको घेर लिया, हज्जाम बाल मूंडता जाता था और सहाबा ऊपर ही ऊपर बालों को उचक लेते थे।।

इस्लामी नियम है कि कोई किसी से मिलने जाएं तो पहले सलाम करे और जब घर वाला अनुमति दे तो घर में प्रवेश करे यदि तीसरे सलाम पर भी अनुमति न मिले तो लौट जाये। इस्लामी सलाम ईश्वर से शुभ कामना है,। एक बार महा ईश दूत अपने सहाबी हज़रत साद (रज़ि०) से मिलने गए और द्वार के बाहर से सलाम कहा। उन्होंने इतने धीरे से उत्तर दिया कि महा ईश दूत सुन न सकें। उनके पुत्र ने कहा रसूलुल्लाह को आने की अनुमति क्यों नहीं देते ? बोले चुप रहो। हम चाहते हैं कि आप बार बार सलाम करें। और हमें ईश्वर की ओर से बार बार पुण्य तथा कल्याण प्राप्त हो। तीसरी बार सलाम कर के महा ईश दूत लौटने लगे तो हज़रत साद (रज़ि०) जल्दी से निकले बोले—हम धीमी आवाज से उत्तर देते थे कि आप बार बार सलाम करें और हमें अधिक से अधिक लाभ प्राप्त हो।

असीम आज्ञा पालन—जो लोग महा ईश दूत से इतना प्रेम और इतनी श्रद्धा रखते थे वह कैसे आज्ञाकारी होंगे उसका

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। एक बार महा ईश दूत मदीने की अपनी मस्जिद में भाषण कर रहे थे, आपके एक सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा थे, वह घर से भाषण सुनने आ रहे थे मस्जिद के निकट पहुंचे तो महा ईश दूत की यह आवाज़ कान में पड़ गयी 'अपनी अपनी जगह बैठ जाओ।' आपने तो यह आज्ञा उन लोगों को दी थी जो आप के सम्मुख थे परन्तु आप के सहाबी आपकी आज्ञा का इस प्रकार पालन करते थे कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा के कानों में जैसे ही महा ईश दूत की आवाज पड़ी वह अपनी जगह रास्ते ही में बैठ गये।

यह तो महाईश दूत के सहचर थे आपकी धर्म पत्नी हज़रत आइशा (रजि॰) की कोठरी का द्वार मस्जिद से मिला हुआ था। एक बार महाईशदूत मस्जिद में उपदेश दे रहे थे और हज़रत आइशा (रजि.) की दासी आपके बाल सँवार रही थी, महाईशदूत ने उपदेश करते हुये कहा—"लोगों! सुनो!" वह हड़बड़ा कर उठने लगीं। दासी ने कहा "तनिक रुक जाइये। बोलीं तुमने सुना नहीं अल्लाह के रसूलने क्या फरमाया है" और महा ईश दूत का उपदेश सुनने के लिये द्वार से लगकर खड़ी हो गयीं।

मदीने के एक व्यक्ति हज़रत तलहा बिन बराअ् थे, वह मुसलमान हुये तो भावपूर्ण अवस्था में महाईशदूत से निवेदन किया। ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे जोभी आज्ञा देंगे बिना किसी आगा पीछा के मैं उसका पालन करूँगा। उनके पिता अभी तक मुसलमान नहीं हुये थे आपने फरमाया—तो जाओ अपने पिता की गर्दन मारदो"। हज़रत तलहा उसी समय घर की ओर चले। महा ईश दूत ने उनको रोक लिया कहा—मैंने केवल परीक्षा के लिये यह बात कही थी मेरा काम सम्बन्ध विच्छेद नहीं है।

महाईश दूत के एक दास हज़रत सोबान थे जिनको आप ने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतंत्रता प्रदान करदी थी। आपने उनको उपदेश किया था वह किसी से याचना न करें। इस उपदेश का उन्होंने जीवन भर इस कड़ाई से पालन किया कि वह सवारी पर होते कोड़ा गिर जाता तो स्वयं सवारी से उतर कर कोड़ा उठाते। किसी से कोड़ा उठाने की याचना न करते।

महा ईश-दूत के एक रुहानी हज़रत हकीमबिनहज़ाम थे। उन्होंने एक बार महा ईश-दूत की सेवा में किसी वस्तु के लिये याचना की आपने पूरी कर दी कुछ दिनों बाद उन्होंने फिर याचना की। याचना मनुष्य को सम्मानहीन बना देती है और यह एक मनुष्य के लिये उचित नहीं है। इसीलिये महा ईश-दूत विभिन्न प्रकार से उसकी मनाही करते थे। जब हकीम बिन हज़ाम ने दूसरी बार याचना की तो आपने वह पूरी तो कर दी परन्तु फरमाया नीचे के हाथ से ऊपर का हाथ हर अवस्था में उत्तम है। अर्थात् मनुष्य को लेनेवाला नहीं देनेवाला बनना चाहिये। हज़रत हकीमबिन हज़ाम ने महा ईश-दूत के इस उपदेश का जीवन पर्यन्त इस कड़ाई से पालन किया कि उनको महा ईश-दूत के दो खलीफा (उत्तराधिकारी) हज़रत अबूबक्र (रजि०) और हज़रत उमर (रजि०) का समय मिला परन्तु उनसे वह धन भी स्वीकार न किया गया जो नियम अनुसार उनका अधिकार था और सबको मिलता था।

इस प्रकार सहाबा की महा ईश-दूत के प्रति प्रेम श्रद्धा और आज्ञा पालन के वर्णनों से महा ईश-दूत और सहाबा का जीवन चरित्र भरा हुआ है हमने विषय के अनुसार थोड़े से उदाहरण उपस्थित किये हैं। यदि महा ईश-दूत ने अपनी शिक्षा, उपदेश, आदेश और कर्म के द्वारा कड़ाई से इसका प्रबन्ध न किया होता कि लोग आपको ईश्वर का दूत और भक्त ही मानें ईश्वर या ईश्वर का अवतार आदि न मानें तो लोग अवश्य ही सहर्ष आपको ईश्वर और उसका अवतार मान लेते।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महा ईश-दूत की ईश्वर भक्ति

महा ईश दूत हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम) के आचार-व्यवहार में सर्वप्रथम वर्णनीय आपकी ईश्वर भक्ति है जिस मनुष्य का जो जीवन लक्ष्य होता है यदि वह अपने लक्ष्य में सच्चा होता है तो उसका कार्य-व्यवहार भी उसी के अनुकूल होता है। और उसका कार्य-व्यवहार स्वयं उसके लक्ष्य का प्रमाण और साक्षी होता है। अल्लाह ने जितने रसूल, नबी और सन्देशवाहक भेजे सबका परम लक्ष्य एक ही था। और वह था मनुष्य को यह बताना, सिखाना और समझाना कि ईश्वर से उसका वास्तविक सम्बन्ध किस प्रकार का है ईश्वर ही सृष्टी का स्रष्टा है और मनुष्य का जन्मदाता है वही सबका स्वामी और पालनहार है उसके गुण कर्म और अधिकार में कोई उसके समान नहीं। एक वही इस योग्य है कि मनुष्य उसकी आज्ञा माने उसी की पूजा उपासना करे तथा अपने सम्पूर्ण जीवन से उसका भक्त बनकर रहे। ईश-दूतों ने अपने-अपने समय के मनुष्यों को इसी की शिक्षा दी और स्वयं अपने आचरण से ईश्वर भक्ति का आदर्श उपस्थित किया वह चाहते तो स्वयं अपनी पूजा उपासना करा सकते थे परन्तु यह उनके पद के विरुद्ध था। उनका कर्तव्य तो मनुष्य को यह समझाना था कि मनुष्य की वास्तविक प्रतिष्ठा ईश्वर बनने में नहीं उसका भक्त बनने में है। यही सत्यधर्म और सत्यपथ है। अल्लाह के अंतिम रसूल और महा ईश-दूत ने अपने सम्पूर्ण जीवन से यही तथ्य समझाया और अपने समस्त आचार व्यवहार से यही आदर्श उपस्थिति किया और यह आपके महा ईश दूत होने का अकाट्य प्रमाण है। आप एक ही समय में धर्म गुरु और धर्म नेता भी थे, सुधारक भी थे, सेनापति भी थे, नियम निर्माता भी थे, शासक भी थे, न्यायाधीश भी थे गृहस्थ भी थे और सब कुछ होते हुए और सभी अवस्था में परम ईश्वर भक्त भी थे संसार से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलग जंगल, खोह, गुफा, मठ आदि में बैठकर ईश्वर भक्ति सरल है। परन्तु महा ईश-दूत की विशेषता यह है कि हर प्रकार के सांसारिक साधारण तथा असाधारण कार्यों का सम्पादन करते हुए भी आपका जीवन ईश्वर भक्ति से ओत-प्रोत था। इस्लाम में ईश्वर उपासना की सर्वांग विधि नमाज़ है। इसीसे उपासना में उसका विशेष महत्त्व है। हर मुसलमान के लिये दिन रात में पाँच बार नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ अर्थात् अनिवार्य कर्त्तव्य हैं। नमाज की विशेषता इसलिये है कि उसमें उपासना के सब प्रकार आ जाते हैं। ईश्वर के सम्मुख खड़ा होना घुटनों पर हाथ रखकर झुकना भूमि पर माथा टेकना बैठना और प्रत्येक अवस्था में ईश्वर का स्मरण तथा उसकी सत्ता महत्ता और पवित्रता का वर्णन और उससे लौकिक पारलौकिक कल्याण की याचना करना। महा ईश-दूत को नमाज़ इतनी प्रिय थी कि आपने उसको अपनी आँखों की ठंडक कहा है। अर्थात् आपकी ईश्वर भक्ति केवल नियम की पूर्ति न थी ईश्वर प्रेम की भक्ति थी उसमें आपको ईश्वर की समीपता प्रतीत होती थी हार्दिक सुख मिलता था। हार्दिक शांति अनुभव होती थी। अनिवार्य नमाज़ तो दिन रात में पाँच ही समय की थी परन्तु महा ईश-दूत आठ समय नमाज़ पढ़ा करते थे। सूर्योदय से पहले, सूर्योदय के बाद, फिर और दिन चढ़े, फिर सूर्य ढले दोपहर बाद, फिर सूर्य अस्त से पहले, सूर्य अस्त के पश्चात्, लगभग एक तिहाई रात गये, फिर सोने के बाद कभी आधी रात को कभी कुछ पहले और कभी कुछ बाद उठ कर नमाज़ पढ़ते, यह नमाज़ बड़ी लम्बी लम्बी होती नमाज़ में खड़े होकर कुर्आन का पाठ आरम्भ कर देते तो इतनी इतनी देर खड़े रहते मानो खड़े ही रहेंगे घुटनों पर झुकते तो इतनी देर झुके रहते और ईश्वर की पवित्रता एवं महानता का पाठ करते रहते मानो झुके ही रहेंगे। माथा भूमि पर रखकर ईश्वर की पवित्रता एवं महिमा का पाठ करते तो जान पड़ता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब सर उठायेंगे ही नहीं यह वर्णन कोई और नहीं महा ईश-दूत की धर्मपत्नी माता आइशा (रजि०) ने किया है! संयोगवश कोई दूसरा महा ईश-दूत के साथ नमाज़ में खड़ा हो जाता तो खड़े खड़े थक जाता और चाहता कि नमाज़ तोड़कर अलग हो जाय। नमाज़ में खड़े खड़े आपके पाँव सूज जाते और जब आपसे कहा जाता कि ईश्वर ने तो आपको सब प्रकार से क्षमा कर दिया है फिर आप इतना कष्ट क्यों उठाते हैं? तो कहते क्या मैं कृतज्ञ भक्त न बनूँ अर्थात् जैसे जैसे ईश्वर की कृपा में वृद्धि होती जाती आपकी भक्ति उत्तरोत्तर बढ़ती चली जाती ऐसी प्रेममय भक्ति थी महा ईश-दूत की।

महा ईश-दूत शान्ति और सुविधा ही की अवस्था में नमाज़ न पढ़ते थे। ईश-दूतत्व के आरंभिक वर्षों में जब मक्के के विरोधियों के सम्मुख नमाज़ पढ़ना सम्भव न था आप मक्के के बाहर पहाड़ी स्थान में नमाज़ पढ़ा करते थे, आगे चलकर आप काबे में नमाज़ पढ़ने लगे जब आप पर घातक आक्रमण भी हुए। मदीना प्रस्थान के बाद जब मक्के निवासियों ने युद्ध आरंभ किया तो एक ओर युद्ध होता रहता था और दूसरी ओर आप नमाज़ पढ़ते होते थे यात्रा में सवारी पर बैठे बैठे नमाज़ पढ़ते रहते अर्थात् आप घर में हों मस्जिद में हों यात्रा में हों युद्ध स्थल में हों हर अवस्था में आप ईश्वर भक्त थे।

व्रत (रोज़ा) का हिन्दू धर्म में भी बहुत महत्व हैं अतः इसके महत्व के बारे में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं, इस्लाम में भी रोज़ा का बड़ा महत्व है। भक्ति के लिये मन का वश में रहना अनिवार्य है और व्रत मन को वश में रखने का विशेष साधन है। अतः इस्लाम में साल में एक महीने का व्रत अनिवार्य है जो रमज़ान के महीने में रखा जाता है। परन्तु महा ईश-दूत हर हफ्ते सोमवार और बृहस्पतिवार को व्रत से रहते और हर महीने की १३-१४-१५ तारीख को. माता आइशा (रजि०) कहती हैं कि कभी कभी आप इस प्रकार निरंतर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्रत रखते मानो आप कभी उसे छोड़ेंगे ही नहीं। रमज़ान के पूर्व मास शाबान में विशेष रूप से अधिक व्रत रखते।

यह तो भक्ति की दो मुख्य पद्धतियाँ थीं। इनके अतिरिक्त एक पद्धति थी प्रत्येक समय और प्रत्येक अवस्था में ईश्वर का स्मरण और ईश्वर से प्रार्थना, एक सच्चे ईश्वर प्रेमी और भक्त की विशेषता यह है कि वह सब कुछ करता हुआ भी ईश्वर को याद करता रहे और प्रत्येक कार्य और प्रत्येक स्थिति में अपने को ईश्वर के अधीन समझे। महा ईश-दूत वज़ू करते, मस्जिद में जाते, भोजन के आरंभ में, भोजन के उपरांत, रात्रि को सोते समय, प्रातः काल जागते समय, घर से बाहर निकलते, बाहर से घर में प्रवेश करते, यात्रा को जाते समय, यात्रा से लौट कर घर पहुँचने पर, यात्रा मार्ग में कहीं पड़ाव करने पर, किसी नगर में प्रवेश करते हुए, सारांश यह कि प्रत्येक अवस्था में और प्रत्येक कार्य करते हुए आप ईश्वर का स्मरण और उस से प्रार्थना करते। यह कुछ कोरी बातें नहीं है, जिन पुस्तकों में महाईश दूत के जीवन का विस्तृत विवरण है अर्थात् हदीस की पुस्तकों में महा ईश दूत की सब प्रार्थनायें आदि वर्णित हैं। हज़रत इब्नरबीआ अस्लमी (रज़ि.) रात को महा ईश दूत के घर का पहरा देते। वह कहते हैं कि महा ईश दूत के "सुब्हानल्लाह" (ईश्वर निर्दोष है) "लाइलाह इल्लल्लाह" (ईश्वर के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं) आदि का इतना जाप करते कि हम सुनते सुनते घबरा जाते और सो जाते।

प्रार्थना

प्रार्थना महा ईश-दूत हज़रत मुहम्मद (स०) साहब के पवित्र जीवन का अति महत्वपूर्ण विषय है, धर्म की बुनियाद ईश्वर विश्वास पर है। ईश्वर विश्वास का अर्थ केवल इतना ही मानना नहीं कि ईश्वर है, बल्कि इस बात का ठीक-ठीक समझना भी आवश्यक है

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि हम उसको किस प्रकार मानें और उसके प्रति हमारा व्यवहार कैसा हो ? यदि इसमें तनिक भी भूल हो जाए और कोई त्रुटि और दोष रह जाए, उसके प्रति मानने को कुछ, और हम मानने लगें कुछ तो उसका प्रभाव पूरे धर्म पर पड़ेगा। और धर्म आदि से अंत तक दूषित हो जाएगा। केवल कहने की बात नहीं है, ऐसा होता चला आया है और वर्तमान समय में भी ऐसा हो रहा है। विचारकों और दार्शनिकों ने ईश्वर को अपनी अपनी रुचि और विचार के सांचे में ढालकर उपस्थित कर दिया और लोगों ने उसी को ईश्वर का स्वरूप मान लिया, जाहिर है कि वह ईश्वर का सत्य स्वरूप न था, वह स्वरूप था विचारकों और दार्शनिकों के विचार और दर्शन का।

ईश्वर विश्वास सम्बन्धी उन्हीं दोषों और त्रुटियों को दूर करने और ईश्वर की सत्ता के अनुकूल विश्वास की शिक्षा देने के लिए समय समय पर ईश्वर की ओर से दूत नियुक्त होते रहे। महा ईश-दूत हज़रत मुहम्मद साहब (स०) के समय में ईश्वर के प्रति सर्वथा दूषित और उसकी महानता तथा पवित्रता के विरुद्ध विश्वास का प्रचार था।

ईश्वर के विषय की सबसे मुख्य बात यह है कि उससे हमारा सम्बन्ध किस प्रकार का है, और उसके प्रति हमारा विश्वास, और व्यवहार कैसा होना चाहिए, ? ईश्वर कितना महान है, हम कितने तुच्छ हैं, ईश्वर कितना बलशाली है, हम कितने निर्बल है। ईश्वर कितना अधिकार संपन्न है हम कितने विवश हैं, ईश्वर कितना साधन संपन्न है हम कितने साधनहीन हैं; हम सर्वथा ईश्वर के अधीन हैं। हमें वह न देना चाहे तो हमें कुछ नहीं मिल सकता। हमारे पास जो कुछ है उसी का प्रदान किया हुआ है, हमें जो कुछ मिल सकता है उसी की दया से मिल सकता है। महा ईश-दूत ने अपनी प्रार्थनाओं द्वारा उन्हीं तथ्यों को प्रकाशित किया है और समझाया है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महा ईश-दूत की प्रार्थनाएँ वेदांत के तथ्यों और धर्म रहस्यों का सार एवं शिक्षा, उपदेश और ज्ञान का स्रोत हैं। उनका अध्ययन करते हुए दो बातों का ध्यान में रखना आवश्यक है।

१—मनुष्य उसीसे मांगता है जिसको वह दयालु और दानशील समझता है जिससे आशा रखता है और जिसके विषय में उसको विश्वास होता है कि वह उसकी मांग पूरी करने के योग्य है और वह उसकी मांग पूरी करेगा या कर सकता है।

२—हर मनुष्य का एक स्वभाव होता है, एक मनोवृत्ति और रुचि होती है, और उसकी आवश्यकता और मांग, उसके स्वभाव, उसकी मनोवृत्ति और रुचि के अनुसार होती है और उसकी मांग से हम समझ सकते हैं कि वह मनुष्य किस आचार और व्यवहार का है। महा ईश-दूत को भी हम उनकी प्रार्थनाओं से भली भांति समझ सकते हैं कि वह ईश्वर को किस प्रकार और कैसा मानते थे, ईश्वर के प्रति कैसा विश्वास रखते थे और ईश्वर से किन चीजों की मांग किया करते थे। इन्हीं मांगों से हम यह भी समझ सकते हैं कि महा ईश-दूत का स्वभाव कैसा था, उनकी प्रकृति कैसी थी, उनकी मनोवृत्ति और रुचि कैसी थी, उनका व्यक्तित्व और आचरण कैसा था? उनकी अभिलाषा कैसी थी, वह कैसे थे; तथा उनकी प्रार्थनाओं से ईश्वर के प्रति कैसे विश्वास की, कैसी आस्था की, कैसी भक्ति की, कैसे आचरण की, और कैसी नैतिकता, और मानवता की शिक्षा मिलती है?

इतना ही नहीं यदि आप शुद्ध मन और शुद्ध हृदय से महा ईश-दूत की प्रार्थनाओं का अध्ययन करेंगे तो स्वयं आपकी अंतरात्मा बोल उठेगी कि हज़रत मुहम्मद (स०) महा मानव, महान ईश्वर भक्त तथा ईश्वर के सच्चे दूत थे। यदि आपका हृदय शुद्ध है, ईश्वर प्रेमी है, भक्तिमय है तो महा ईश-दूत की प्रार्थनाओं के एक एक शब्द

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से आपको ऐसा प्रतीत होगा कि वह स्वयं आपके हृदय की पुकार और आपकी आत्मा की याचना है।

यदि आपने इस पुस्तक के पहले भाग को पढ़ा होगा तो आपको विदित होगा, और अगर नहीं पढ़ा है तो कृपा करके उसे पढ़िए। इससे आपको मालूम होगा कि महा ईश-दूत ने अपने को सर्वथा ईश्वर को समर्पित कर दिया था, वह सर्वथा उसके भक्त और आज्ञा पालक बन गए थे। कैसी ही प्रतिकूल अवस्था हो, ईश्वर की जो आज्ञा होती आप उसका पालन करते, ईश्वर को अपना सर्वस्व समझते, उसी पर भरोसा रखते, अपने हर दुख हर कष्ट और अपनी हर कठिनाई को उसीके सम्मुख उपस्थित करते, और उसीसे सहायता मांगते। बड़े प्रतिकूल वातावरण में आपको ईश-दूत पद प्रदान किया गया था। सारा देश बहुदेव पूजक था और आपको आज्ञा दी गई कि आप एकेश्वरवाद का उपदेश करें। आप अपनी जाति के एक साधारण व्यक्ति थे। न आपके पास कोई दल था और न कोई शक्ति थी, आप अकेले थे। एकेश्वर वाद के उपदेश का आरंभ करते ही आपका नगर और परिवार आपका विरोधी हो गया और पग पग पर आपका विरोध होने लगा और आपको कष्ट दिया जाने लगा। आपके रास्ते में कांटे डाले गए। आपके सरपर घरों की छत से कूड़ा फेंका गया। आपके ईश-दूतत्व को झुठलाया गया, आपको पागल, जादूगर, कवि आदि बनाया गया काबा में नमाज़ पढ़ते हुए आपकी हत्या का प्रयास किया गया। आपका तीन साल तक बहिष्कार रक्खा गया। आपकी हत्या की सामूहिक योजना बनाई गई कि आपके सम्बन्धी आपका बदला न ले सकें, आपको देश त्याग पर बाध्य किया गया। आपसे युद्ध किये गये। आप इन सारी ही परिस्थितियों में अपने कर्त्तव्य पर दृढ़ पग रहे और एक ईश्वर ही आपका सहारा रहा, आप उसीके सम्मुख अपनी कठिनाइयां और विपत्तियां रखते और उसीसे सहायता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मांगते। देश त्याग से पहले की घटना है, जब आप मक्का निवासियों से निराश हो गए तो ताएफ़ गए जो मक्का के बाद अरब का दूसरा नगर है। वहां के सरदारों ने नगर के दुष्टों और अत्याचारियों को आपके पीछे लगा दिया। उन्होंने आपको पत्थर मार-मार कर लहू लहान कर दिया। आप बेहोश हो गए। आपको ऐसा कष्ट मक्का निवासियों ने भी न दिया था। आप दुखी हृदय लिए हुए ताएफ़ से मक्का लौटे। इस समय की आपकी प्रार्थना देखिए। क्या ईश्वर के सच्चे दूत और सच्चे भक्त के सिवा किसी के हृदय में ऐसा उद्गार उठ सकता है? और उसके मुख से ऐसी श्रद्धामय और ऐसी भक्तिमय प्रार्थना निकल सकती है? आपकी प्रार्थना में जो पीड़ा और प्रभाव है वह तो कुछ आपके मूल शब्दों ही से अनुभव हो सकता है तथापि उसके भावार्थ से उसका अनुमान कीजिए। आपने प्रार्थना की—"हे अल्लाह! मैं अपनी निर्बलता, साधनहीनता तथा उस अपमान की जो लोगों ने की, तुझी से फ़रियाद करता हूँ। सारे दुर्बलों का और मेरा स्वामी तू ही तो है! तू मुझे किसके हवाले करता है? क्या निर्दयी अथवा ऐसे शत्रु के जो अपनी सी करने का अधिकार रखता है? यदि मुझ पर तेरा प्रकोप नहीं (और तू मुझसे प्रसन्न है) तो मुझे इसकी कुछ चिंता नहीं (कि मुझ पर क्या बीतती है) यद्यपि तेरी ओर से मुझे जो शान्ति प्रदान हो वह, मेरे अधिक अनूकूल है। मैं तेरी सत्ता के प्रकाश से जिससे सब अंधकार प्रकाश मान हो जाते हैं और लोक परलोक के सब काम ठीक हो जाते हैं, इस बात से शरण माँगता हूँ कि मुझ पर तेरा प्रकोप उतरे या तू मुझसे अप्रसन्न हो। मुझे केवल तेरी प्रसन्नता चाहिए तथा भलाई के काम करने और बुरे कामों से बचने की शक्ति तुझी से प्रदान हो सकती है।"

यह तो थी महाईश दूत की वह प्रार्थना जब आप महा दुर्बल, महा साधन हीन, तथा अत्यंत कष्ट ग्रस्त थे, आपके मुठी भर अनुयायी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी कष्ट भोग रहे थे और आपकी कोई सहायता न कर सकते थे। चारों ओर दुख कष्ट और विपत्ति का घोर अन्धकार छाया हुआ था। अब महाईश दूत की उस समय की प्रार्थना देखिए—

जब मक्का विजय हो चुका है। मक्का के सारे शत्रु मुसल्मान हो चुके हैं और आप की सेवा और सहायता को परमधर्म मान रहे हैं। आपके मार्ग में कांटा बिछाने के स्थान पर आँखें बिछाने को तय्यार हैं अरब भर में कोई आपका प्रतिद्वन्द्वी नहीं है, दूर दूर तक इस्लाम फैल चुका है। आप अपने जीवन के अंतिम साल मदीने से हज के लिए मक्का गए हुए हैं। अरब के कोने-कोने से एक लाख चौबीस हज़ार मुसल्मान मक्के के बाहर अरफ़ात के मैदान में एकत्रित हैं, सबके हृदय महाईश दूत की श्रद्धा से परिपूर्ण हैं, आप के दर्शन और आप के उपदेश सुनने के उत्सुक हैं और इस को अपने जीवन का सब से बड़ा सौभाग्य समझते हैं। ऐसी अपूर्व विजय, अपूर्व सफलता और ऐसे श्रद्धालुवों के बीच महाईश दूत ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं, भावार्थ पर विचार कीजिए—

'हे अल्लाह! तू मेरी बात सुन रहा है. मेरे स्थान को देख रहा है, तू मरे छिपे से भी अवगत है और मेरे प्रकट से भी, मेरी कोई बात तुझ से छिपी नहीं है, मैं विपत्ति ग्रस्त हूँ, मुहताज हूँ, फ़रियादी हूँ, शरण का प्रार्थी हूँ, चिंतित हूँ, भयभीत हूँ, स्वीकार करता हूँ कि मैं पापी हूँ।

तुझ से इस प्रकार याचना करता हूँ जैसे निःसहाय याचना करते हैं। तेरे आगे इस प्रकार गिड़गिड़ाता हूं जैसे नीच पापी गिड़गिड़ाते हैं और तुझ से इस प्रकार याचना करता हूँ जैसे भयभीत विपत्ति ग्रस्त याचना करता है, जैसे वह व्यक्ति याचना करता है जिसकी गर्दन तेरे आगे झुकी हो और उसकी आँखों से आँसू जारी हों। और सिर से पैर तक तेरे सम्मुख अपनी हीनता प्रकट कर रहा हो और तेरे आगे अपनी नाक रगड़ रहा हो।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐ अल्लाह। तू मुझे प्रार्थना करने वालों में असफल न कर, मेरे प्रति अति दयावान तथा कृपा शील बन जा! हे उन सबमें श्रेष्ठ जिनसे याचना की जाए! और हे सब दानियों में श्रेष्ठ दान शील"

(मुनाजाते मकबूल कन्जुलउम्माल)

तनिक विचार कीजिए, यह प्रार्थना करने वाला कौन है? जो ईश्वर के दूतों में सबसे श्रेष्ठ और अंतिम दूत है, जो ईश्वर का सबसे बड़ा भक्त तथा आज्ञाकारी है। जिसने अपने जीवन को ईश्वर भक्ति और आज्ञा पालन में विलीन कर दिया है। जिसने गुफा, पर्वत, जंगल, घर, उपासना गृह ही में उपासना, भक्ति और आज्ञा पालन नहीं किया बल्कि शत्रुवों की सेना के बीच तलवार की छाँव में भी ईश्वर की आज्ञा का पालन किया। जिसने बहु देव पूजक देश से बहु देव वाद को समाप्त कर के देश वासियों को ईश्वर का उपासक और आज्ञा कारी बना दिया, यह उसकी प्रार्थना है। इस प्रकार इस महाईश दूत ने मनुष्य को समझाया कि ईश्वर की महिमा क्या है उसके सम्मुख मनुष्य की स्थिति क्या है? कोई मनुष्य चाहे कितना ही महान हो कितना ही कीर्तिमान हो, कितना ही धार्मिक हो, कितना ही बड़ा भक्त और आज्ञाकारी हो परन्तु वह ईश्वर के सम्मुख नत मस्तक रहे, अपने को हीन और तुच्छ समझता रहे, उससे डरता रहे, और उससे दया और कृपा की याचना करता रहे, भक्ति का परम रहस्य यह है कि जो मनुष्य ईश्वर का जितना निकट वर्ती होता जाता है उस पर ईश्वर की उतनी ही महानता और अपनी तुच्छता तथा हीनता प्रकट होती जाती है और उसका भक्ति भाव उतना ही उन्नत होता जाता है। यही है मूल ज्ञान और यही है ज्ञान प्रकाश, शेष सब वेदाँत और दर्शन भ्रम और भ्रम मूलक तथा अज्ञान है।

आपने महाईश दूत के विषय में बहुत कुछ सुन रखा होगा। सत्य के शत्रुवों और विद्वेषियों की पुस्तकों में बहुत कुछ पढ़ा भी होगा कि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप ईशदूत न थे। बड़े निर्दयी थे। बड़े कठोर थे और बड़े कट्टर थे। आप की शिक्षा केवल मार काट की शिक्षा है। निसन्देह आपने युद्ध भी किया। इस्लाम में युद्ध की शिक्षा भी है। परन्तु दुष्टों और नास्तिकों से धर्म की रक्षा, धर्म की स्थापना, अत्याचार के उन्मूलन, मानवता की रक्षा और न्याय की स्थापना के लिए किस धर्म में युद्ध की आज्ञा नहीं है? परन्तु आज आपके सामने कोई सार्वजनिक भाषण नहीं है. महाईश दूत की प्रार्थनाएँ हैं। इन प्रार्थनाओं के प्रकाश में आप को महाईश दूत का वास्तविक स्वरूप कैसा दिखाई देता है? क्या किसी वेदान्ती, किसी योगी, किसी भक्त और किसी संत का ईश्वर के प्रति ऐसा हृदयोद्गार आपने कभी देखा था? लीजिए युद्ध संबन्धी भी एक प्रार्थना देख लीजिए, आपको विदित हो जाएगा कि आप के युद्ध का उद्देश्य क्या था और किस अवस्था में आपको युद्ध करना पड़ा।

महा ईश-दूत को मक्का त्याग किये हुए दूसरा साल है। मदीने में इस्लाम के उन्नति करते और महा ईश-दूत की शक्ति और प्रभाव में वृद्धि होते देख कर मक्का के सरदारों का क्रोध और भड़क उठा है। वह एक हजार के दल बल के साथ मक्के से निकले हैं कि मुट्ठी भर मुसलमानों को समाप्त करके इस्लाम के दीपक को सदा के लिये बुझा दें। इस सेना में पैदल भी हैं, घुड़ सवार भी, सब के पास आवश्यकता के अनुसार अच्छे हथियार हैं, खाने पीने की आवश्यकता से अधिक सामग्री है, मदीने से महा ईश-दूत निकले हैं, जिनके साथ केवल तीन सौ तेरह मुसलमान हैं, जिनके पास न पर्याप्त सवारियाँ हैं, न अच्छे हथियार हैं, न खाने पीने का पूरा सामान है, किसी के पास थोड़ी सी खजूरें हैं और किसी के पास थोड़ा सा सत्तू। दोनों सेनाएं आमने सामने होती हैं तो महा ईश-दूत अपने तीन सौ तेरह साथियों के सम्मुख एक हजार के हथियारों से सुसज्जित दल को देखकर व्यग्र हो उठते हैं। परन्तु ईश्वर आप को सहायता और सफलता का वचन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दे चुका है । इसी व्यग्र अवस्था में आप के हाथ फैल जाते हैं । आप ईश्वर से प्रार्थना करते हैं "हे अल्लाह ! तूने मुझसे सहायता का जो वादा किया है उसको पूरा कर ।"

आप प्रार्थना में लीन हैं और आपके कंधे से आप की चादर गिरी जाती है । कभी आप भूमि पर माथा टेक देते हैं । कहते हैं "हे अल्लाह ! यह मुट्ठी भर मुसलमान आज समाप्त हो गये तो फिर प्रलय काल तक तेरी उपासना न होगी" ।

ईश्वर ने अपने दूत की प्रार्थना सुनी और आप की पूर्ण विजय हुई ।

केवल इसी एक बात से प्रकट हो जाता है कि इस्लामी युद्ध का उद्देश्य क्या है और महा ईश-दूत (स०) को क्यों युद्ध करना पड़ा ।

इस युद्ध के छठे ही साल मक्का विजय हो गया महा ईश-दूत (स०) ने मक्का निवासियों के सम्मुख जो विजय भाषण किया उसके आरम्भ में इस प्रकार ईश्वर की वन्दना की ।:—

"अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं, उसका कोई साझी नहीं, अर्थात् वही एक पूज्य है । उसने अपना वादा सच कर दिखाया । अपने भक्त की सहायता की और शत्रुओं को स्वयं असफल कर दिया ।"

यह है सच्चा ईश्वर विश्वास, यह है ईश्वर पर सच्चा भरोसा, यह है सच्ची ईश्वर भक्ति । न आपने दावा किया कि आप ईश्वर या ईश्वर के अवतार हैं, न अपनी किसी कीर्ति को अपनी कीर्ति कहा, अपनी सारी कीर्तियों के विषय में यही कहा कि वह ईश्वर प्रदत्त हैं ।

महा ईश-दूत (स०) की इस प्रार्थना का भावार्थ देखिये—कैसी विनय और कैसा समर्पण है ! कैसी आस्था है ! कितनी दीनता और हीनता है, कैसा भक्तिमय था वह हृदय जिससे यह उद्गार व्यक्त हुए ! कहते हैं ।:—

"हे अल्लाह ! मैं तेरा दास हूँ, तेरे दास का पुत्र हूँ, तेरी दासी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का पुत्र हूँ, मेरा सर्वस्व तेरे अधिकार में है, मैं सर्वथा तेरी आज्ञा के आधीन हूँ मेरे विषय में तेरा निर्णय सर्वथा न्यायपूर्ण है, मैं तेरे प्रति एक नाम के द्वारा जिसे तूने अपनी सत्ता के प्रति वर्णन किया है या उसको अपनी पुस्तक में एकत्रित किया है, या उसको अपनी सृष्टि में से किसी को बताया है, या उसे अपने पास अप्रत्यक्ष में रहने दिया है, याचना करता हूँ कि महिमाशाली कुरआन को मेरे दिल का बसंत, मेरी आँख की रोशनी, तथा मेरे शोक और मेरी चिन्ता के समाधान का साधन बना दे।" (तिब्रानी)

महा ईश-दूत (स०) ने प्रार्थना को उपासना और भक्ति का सार कहा है, उपासना की कुछ निश्चित विधि है, वह भक्ति का शरीर है। उसकी आत्मा यही भक्ति भाव है जिसको महा ईश-दूत (स०) ने अपनी प्रार्थनाओं में व्यक्त किया है। जिस उपासना में यह विनय और समर्पण भाव न हो वह एक निर्जीव शरीर है।

महा ईश-दूत (स०) की इन प्रार्थनाओं से तो हमें इस बात का ज्ञान मिलता है कि ईश्वर की महिमा क्या है ? हम उसके सम्मुख क्या हैं ? हमारा उससे किस प्रकार का सम्बन्ध है ? अब हम महा ईश-दूत (स०) की ऐसी प्रार्थनाएँ देते हैं जिनसे ज्ञात होगा के महा ईश-दूत का आचरण कैसा था और आपने प्रार्थना के द्वारा ईश्वर से कैसी चीजों की माँग करने की शिक्षा दी है। कौन नहीं जानता कि संसार की सारी वस्तुएं तथा सांसारिक जीवन सब कुछ कितना अस्थायी और अविश्वसनीय है। मनुष्य कुछ नहीं जानता कि उसका अन्तिम समय कब आ जायेगा। यह जीवन कब समाप्त हो जायेगा और सब कुछ छोड़कर चला जाना पड़ जायेगा। परन्तु यह सब कुछ जानते हुए भी मनुष्य परलोक की चिन्ता नहीं करता और संसार ही में भूला रहता है महा ईश-दूत प्रार्थना करते हैं।

"हे अल्लाह ! मेरे धर्म को शुद्ध रख जो मेरे लिये रक्षा है, मेरी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुनिया को शुद्ध रख जिसमें मेरी जीवन सामग्री है, और मेरे परलोक को शुद्ध रख जहाँ मुझे लौट कर जाना है। और मेरे जीवन को हर प्रकार की बुराई से बचने का साधन बना दे। (मुस्लिम)

इस प्रार्थना से यह शिक्षा मिलती है कि भलाई धर्म ही के द्वारा मिल सकती है, जीवन सामग्री वही शुभ है जो शुद्ध हो, वास्तविक सुख परलोक ही का सुख है, जीवन हो तो कल्याण की वृद्धि के लिये हो। बुराई के जीवन से भलाई की मृत्यु अच्छी है।

इसी प्रकार की एक प्रार्थना यह है—

"ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे ऐसी निअ्मत (सुख सामग्री) की याचना करता हूँ जो कभी समाप्त न हो, और आँखों की ऐसी ठंडक जो स्थायी हो, और तुझसे याचना करता हूँ (अपने भाग्य सम्बन्धी) तेरे निश्चय पर प्रसन्न रहने और मरने के बाद के सुख शांति की, तेरे दर्शन के स्वाद तथा तेरे दर्शन की अभिलाषा की" (मुस्तदरक)

जो लोग इस्लामी शिक्षा का ज्ञान नहीं रखते वह इस्लामी जन्नत को भी बैकुण्ठ के समान समझते हैं और कहते हैं कि जन्नत में भी सांसारिक सुख विलास के सिवा और क्या है ? परन्तु महा ईश-दूत (स०) की इस प्रार्थना से प्रकट है कि परलोक और जन्नत का वास्तविक सुख और आनन्द ईश्वर का दर्शन है। भक्ति का मूल आधार है ईश्वर से प्रेम, महा ईश-दूत (स०) प्रार्थना करते हैं "ऐ अल्लाह ! मुझे अपना प्रेम, मेरी जान से मेरे घर वालों से, और ठंडे जल से अधिक प्रिय कर दे। (तिरमिज़ी)

महा ईश-दूत (स०) मनुष्य के मनोदशा के ज्ञाता थे, जिस प्रेम के साथ भय न हो वह भी मनुष्य को स्वच्छन्द बना देता है, इसलिये महा ईश-दूत (स०) प्रार्थना करते हैं "ऐ अल्लाह ! अपने प्रेम को मेरे लिये सारी वस्तुओं से अधिक प्रिय, और अपने भय को मेरे लिये

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब वस्तुओं से अधिक भयावह बना दे, और मुझे अपने मिलन की अभिलाषा प्रदान करके मेरी समस्त सांसारिक आवश्यकताओं की जड़ काट दे, और जहाँ दुनिया वालों की आँखें उनकी दुनिया से ठंडीं कर रखी हैं मेरी आँखें अपनी भक्ति से ठंडी रख।" (कन्जुलउम्माल)

अब हम महा ईश-दूत (स०) की कुछ ऐसी प्रार्थनाएँ उपस्थिति करते हैं जिनसे ज्ञात होगा कि आपका स्वभाव और आचरण कैसा था। आप ईश्वर से किन चीजों की प्राप्ति और किन चीजों से बचने की याचना किया करते थे, और अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा कैसी मानवता पूर्ण तथा प्रभाव जनक शिक्षा दी है।

"ऐ अल्लाह मुझे सर्वोत्तम स्वभाव और आचार का मार्ग तू ही दिखा सकता है। तथा मुझे बुरे आचार और बुरे स्वभाव से बचा, तेरे सिवा बुरे आचार और स्वभाव से बचाने वाला कोई नहीं" (नसई) मनुष्य की मनुष्यता अच्छे स्वभाव और अच्छे आचरण में है और इन दो वस्तुओं को माँग कर महा ईश-दूत (स०) ने सब कुछ माँग लिया है और दो वाक्यों में सब कुछ सिखा दिया है।

प्रार्थनाओं की शैली पर भी ध्यान रहे कितनी सरल और साथ ही कितनी अर्थपूर्ण है। आप प्रार्थना करते हैं।:—

"ऐ अल्लाह! मैं तुझसे ईमान के साथ तन्दुरुस्ती की और अच्छे स्वभाव के साथ ईमान की याचना करता हूँ।" (मुस्तद्रिक हाकिम)

इस प्रार्थना द्वारा महामानव ने बताया कि केवल शरीर का स्वस्थ होना पर्याप्त नहीं, आत्मा का शुद्ध और स्वस्थ होना भी जरूरी है।

इस प्राथना को भी देखिये—केवल तीन चीजों की याचना की है। परन्तु इन तीनों चीजों का मानव जीवन में कितना महत्व है कहते हैं—

"ऐ अल्लाह! मैं तुझसे माँगता हूँ सच बोलने वाली जबान, शुद्ध हृदय और सीधा स्वभाव।" (तिर्मिज़ी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनवान का तो सभी सम्मान करते हैं और उनके प्रति प्रेम प्रदर्शन भी करते हैं। गरीबों की कोई बात भी नहीं पूछता, परन्तु महा ईश-दूत (स०) कितने सहृदय थे। वह प्रार्थना करते हैं—

"ऐ अल्लाह! मैं तुझसे याचना करता हूँ सुकर्म करने की, कुकर्मों के त्याग की, और गरीबों से स्नेह करने की।" (मुस्तदरक हाकिम)

इतना ही नहीं, आप यह प्रार्थना भी किया करते थे—"ऐ अल्लाह! मुझे गरीबी की हालत में जिन्दा रख, (दुनिया से) गरीब ही उठा और परलोक में भी (दोबारा जीवित करके) गरीबों ही के साथ उठाइयो।" (मिश्कात)

इस प्रार्थना से प्रकट है कि महा ईश-दूत (स०) को गरीबों से कितनी सहानुभूति थी! मानव स्वभाव है कि वह अपने को वास्तविकता से अधिक अच्छा दिखाने की चेष्टा करता है, लेकिन ईश्वर तो अन्तर-यामी है वह प्रकट अप्रकट सब का जानने वाला है, अतः महा ईश-दूत (स०) प्रार्थना करते हैं—'ऐ अल्लाह मेरे प्रकट को मेरे अप्रकट से भी अच्छा बना दे और मेरे प्रकट को भी शुद्ध कर दे।"

आप महा ईश-दूत तथा ईश्वर के परम भक्त थे फिर भी आपको अपनी कितनी चिन्ता थी। वास्तव में जो ईश्वर का जितना अधिक निकट-वर्ती होता है उसको ईश्वर की महिमा का उतना ही अधिक ज्ञान होता है। महा ईश-दूत प्रार्थना करते हैं। "ऐ अल्लाह! मैं तुझसे शरण चाहता हूँ, ऐसे हृदय से जो तेरा भय न रखता हो, ऐसी प्रार्थना से जो तेरे निकट सुनी न जाये: ऐसे मन से जो सन्तुष्ट न हो, और ऐसी विद्या से जो लाभदायक न हो। मैं इन चारों से तेरी शरण माँगता हूँ।" (तिर्मिज़ी और नसई)

आप जिस तरह बुराइयों से शरण की याचना किया करते थे उसी तरह भलाइयों की माँग भी किया करते थे। आप प्रार्थना किया करते थे—

"ऐ अल्लाह! मैं तुझसे माँगता हूँ सदा बाकी रहने वाला ईमान,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और मैं माँगता हूँ तुझसे भयग्रस्त रहने वाली अन्तर-आत्मा, और मैं तुझसे माँगता हूँ सच्चा विश्वास तथा मैं तुझसे माँगता हूँ सीधा धर्म।"

महा ईश-दूत (स०) की इस प्रार्थना पर विचार कीजिये "ऐ अल्लाह! मेरे जीवन के अंतिम भाग को सर्वोत्तम भाग बनाइयो, और मेरे अंतिम कार्य को सर्वोत्तम कार्य बना दीजियो और मेरा सबसे उत्तम दिन वह हो जिस दिन मैं तुझसे मिलूँ।" (तिब्रानी)

कितनी ज्ञानमय है यह प्रार्थना ? यदि मनुष्य का आरम्भिक जीवन अच्छा हो और उसका अंतिम भाग बिगड़ जाये तो सारा जीवन नष्ट हो जायगा। इसी प्रकार यदि आदमी जीवनभर पुण्य कार्य करता रहा और उसका अंतिम कार्य बुरा हुआ तो जीवनभर के अच्छे काम नष्ट हो जायँगे और मनुष्य का सबसे बड़ा सौभाग्य यह है कि वह जिस दिन ईश्वर के सम्मुख उपस्थित हो वह उसका सबसे अच्छा दिन हो कि ईश्वर उससे प्रसन्न हो। यह नहीं तो सब कुछ अकारत है। महा ईश-दूत (स०) के सिवा ऐसी गहरी दृष्टि किसकी हो सकती है ?

महा ईश-दूत (स०) की यह थोड़ी सी प्रार्थनाएँ इसलिए दी गयीं हैं कि हम उनके प्रकाश में महा ईश-दूत (स०) के अन्तर-आत्मा को देख लें और आपको बाहर ही से नहीं भीतर से भी पहचान लें। विदित हो कि महा ईश-दूत (स०) की एक-एक विषय की एक-एक ही प्रार्थना नहीं है। अनेकों प्रार्थनाएं हैं। इसके साथ यह भी ज्ञात रहे कि जीवन के कुछ विशेष विषयों ही के सम्बन्ध में प्रार्थनाएं नहीं हैं, महत्वपूर्ण से महत्वपूर्ण और साधारण से साधारण सभी विषयों के बारे में प्रार्थनाएं हैं, जैसे भोजन के आरम्भ की प्रार्थना, भोजन के बीच की प्रार्थना, भोजन के अंत की प्रार्थना, सन्ध्या के समय की प्रार्थना, प्रातः की प्रार्थना, सोते समय की प्रार्थना, जागते समय की प्रार्थना, घर से बाहर निकलते समय की प्रार्थना, घर में प्रवेश करने की प्रार्थना, सफर में जाते समय की प्रार्थना, लौटकर आने की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रार्थना, नये कपड़े पहनते समय की प्रार्थना, नया चाँद देखने की प्रार्थना, पाखाने पेशाब और स्त्री सम्भोग तक के समय इन सब कार्यों के अनुकूल आप प्रार्थना किया करते थे। सारांश यह कि आपका पूरा जीवन प्रार्थनामय था। क्या आपके सच्चे महा ईश-दूत होने का इससे भी अधिक प्रमाण की आवश्यकता है? अंत में और एक बात पर विचार कर लीजिये—आप किसी धर्म के मानने वाले हों, महा ईश-दूत को आप कुछ भी मानते हों, यदि आप ईश्वर को मानते हों तो क्या महा ईश-दूत (स०) की प्रार्थनाएं आप के लिये भी उतनी ही भक्तिमय, शिक्षाप्रद, मानवता पूर्ण और कल्याणकारी नहीं है जितनी मुसलमानों के लिये? यही तो है इस बात का प्रमाण कि महा ईश-दूत (स०) सब के लिये थे और उनकी भक्ति, प्रार्थना, दूसरी शिक्षाएँ, तथा आपका आचार्य व्यवहार सबके लिये अनुकरणीय और लाभप्रद है।

ईश्वर पर अपूर्व विश्वास

ईश्वर के सच्चे भक्त हर अवस्था और प्रत्येक परिस्थिति में अपने मार्ग पर दृढ़ रहते हैं। तथा बाधाओं और कठिनाइयों को दूर करने का यथा शक्ति प्रयास करते हैं। परन्तु परिणाम के लिये ईश्वर ही पर भरोसा रखते हैं। ईश्वर पर यही भरोसा उनको अपने मार्ग से विचलित नहीं होने देता। हज़रत मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम) के मार्ग में बड़ी बड़ी बाधाएँ उपस्थित हुयीं। बड़ी बड़ी विपत्तियाँ आयीं, परन्तु वह आप के मार्ग को रोक न सकीं, इसलिये के आप को ईश्वर पर भरोसा था। विश्वास था कि वह आपके साथ है। वह आप को सफलता प्रदान करेगा।

मक्के में महाईश दूत का प्रचंड विरोध हो रहा था, आप पर और आप के अनुयायियों पर भयंकर अत्याचार हो रहे थे, आप में और आप के अनुयाइयों में प्रतिकार की शक्ति न थी। महाईश दूत के चचा अबूतालिब ने परिस्थिति को देखते हुए आपसे कहा—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बेटे ! अपना प्रचार कार्य बन्द कर दो।" आपने उत्तर दिया। "चचा चिन्ता न कीजिये कि मैं अकेला हूँ। सत्य अधिक दिनों तक अकेला न रहेगा। एक दिन अरब और अजम सब उसके साथ होंगे।" एक बार एक अत्याचार पीड़ित सहाबी को सान्त्वना देते हुए फरमाया। "खुदा की क़सम। शीघ्र ही वह समय आने वाला है जब यह धर्म पूर्णता को पहुंच जायेगा और ईश्वर के सिवा किसी का भय बाकी न रह जायेगा" मक्के से मदीने के लिये प्रस्थान करते हुए किस प्रकार महाईश दूत और आप के परम मित्र हज़रत अबूबक्र (रजि०) को तीन दिन रात मक्का की पहाड़ी गुफा 'सौर' में व्यतीत करना पड़ा। शत्रु आपकी खोज में निकले और आपके पद चिन्हों को देखते हुये गुफा के निकट पहुंच गये। हज़रत अबूबक्र महाईश दूत के जीवन के प्रति आशंका से चिंतित हो उठे। बोले "अल्लाह के रसूल शत्रु इतने निकट आ गये हैं कि अपने पाँव की ओर देखें तो हमें देखलें।" आप पूर्ण शांत चित्त से बोले—

"ला तहज़न इन्नल्लाह मअना" अर्थात् तुम कुछ भी चिन्ता न करो हम दो ही नहीं हैं। हमारे साथ तीसरा अल्लाह भी है। गुफा की अवस्था कुछ ऐसी थी कि शत्रु उसमें किसी के रहने का अनुमान न कर सके, और लौट गये।

महाईश दूत मक्के से मदीने गये तो वहाँ भी यहूदी जाति आप की शत्रु बन गई, स्वयं मदीना निवासियों में एक दल ऐसा उत्पन्न हो गया जो ऊपर से मुसलमान बना हुआ था और भीतर से आप के साथ शत्रुता रखता था। उन सबकी मक्का निवासियों से भी साँठ गाँठ रहती थी इसलिये रात्रि को सहाबा पहरा देते थे। उन्हीं दिनों रात्रि के समय ईश्वर की ओर से आप को संवाद मिला "वल्लाहो यासिमुक-मिनन्नास" अर्थात् अल्लाह लोगों से तुम्हारी रक्षा करेगा। आप ने उसी समय पहरा देनेवाले सहाबा से फरमाया। "लोगो ! अब तुम अपने घरों को लौट जाओ, अल्लाह स्वयं मेरी रक्षा करेगा"। महाईश दूत

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक युद्ध से लौट रहे थे, दोपहर दिन का समय था। एक जंगल में पड़ाव हुआ। सहाबा इधर उधर वृक्षों की छाया में सो रहे थे। महाईश दूत भी एक वृक्ष के नीचे विश्राम कर रहे थे, और आप की तलवार एक डाल से लटक रही थी। एक शत्रु ने चुपके से आकर आप की तलवार लेली। इतने में आप की आँख खुल गयी। शत्रु बोला "मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अब मुझसे तुमको कौन बचायेगा ?" आपने निःशंक उत्तर दिया। "अल्लाह !" आपकी वाणी में ऐसा ईश्वर विश्वास और ओज था कि तलवार उसके हाथ से छूट कर भूमि पर गिर पड़ी। महाईश दूत इतने क्षमाशील थे कि ऐसे शत्रु से भी बदला न लिया उसे छोड़ दिया।

ईश्वर के प्रति कृतज्ञता

महाईश दूत का ध्येय कितना महान, तथा उसके प्रति आप का दायित्व कितना कठिन था, और कैसी - कैसी बाधाएँ थीं आप के मार्ग में, कैसे-कैसे कष्ट भोगने पड़े अपने ध्येय की प्राप्ति और पूर्ति के लिये। फिर कैसी पूर्णतम सफलता मिली महाईश दूत को ! शत्रुता समाप्त हो गयी, सत्यधर्म, आदर्श समाज तथा आदर्श राज्य स्थापित हो गया। परन्तु आपने अपनी किसी कीर्ति को अपनी योग्यता और प्रयास का फल नहीं कहा। सब को ईश्वर प्रदत्त बताया, सब के प्रति ईश्वर ही का गुण-गान किया और सब के लिये ईश्वर ही के प्रति कृतज्ञता प्रकट की, मक्का विजय के अवसर पर नगर के समीप पहुंचे तो ईश्वर की दया दृष्टि और सहायता का आप पर इतना प्रभाव था कि ईश्वर के प्रति कृतज्ञता भार से आप का सर झुक गया और आप की ठुड्डी ऊँट के कजावा की लकड़ी से लग जाने के निकट हो गयी।

मक्के में प्रवेश करने के बाद जब आपने विजय भाषण किया तो उसमें अपनी सफलता और कीर्ति की ओर संकेत तक न किया, आपने भाषण का प्रारम्भ इस प्रकार किया—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं, और न उसका कोई भागीदार है। उसने अपना वचन सत्य कर दिखाया उसने अपने भक्त की सहायता की और समस्त (विरोधी) सेनाओं को पराजित कर दिया।"

महाईश दूत का अंतिम हज आप के जीवन का सबसे महत्व पूर्ण कार्य था। उस समय तक समस्त अरब देश ने आप को ईश दूत स्वीकार कर लिया था, अब आप ईश दूत ही न थे अरब के विजेता तथा एक मात्र शासक भी थे। सारा अरब श्रद्धा से परिपूर्ण आप के दर्शन करने और उपदेश सुनने की अपूर्व आकांक्षा लिये हज करने के लिये उमड़ पड़ा था। इस अवसर पर आपने जो भाषण दिया उसमें भी ईश्वर ही का गुणगान किया। कहा—

"अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं, वह अकेला है उसका कोई भागीदार नहीं, उसी का शासन है। स्तुति और प्रशंसा का वही अधिकारी है, वही जीवन तथा मृत्यु देता है, सृष्टि की प्रत्येक वस्तु उसी की शक्ति के अधीन है। उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। वह अकेला है, उसने अपने वचन को पूरा किया, अपने भक्त की सहायता की और समस्त सेनाओं को पराजित कर दिया।

आपने अब तक जो कुछ देखा इससे सिद्ध है कि महाईश दूत अपने जीवन के क्षण-क्षण में परम ईश्वर भक्त तथा महाईश दूत थे।

समुचित आचरण का संक्षिप्त वर्णन

महा ईश-दूत के दूसरे आचार व्यवहार का अलग-अलग वर्णन करने से पहले उचित जान पड़ता है कि आप के आचार व्यवहार के समुचित वर्णन उपस्थित कर दिए जाएं। महा ईश-दूत से आपके सहाबा को जितना प्रेम और जितनी श्रद्धा थी उसका वर्णन ऊपर विस्तारपूर्वक आ चुका है। महा ईश सहाबा ने जिस प्रकार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप के एक एक आचार व्यवहार, एक एक कार्य, एक एक कथन, आप की व्यक्तिगत तथा सामूहिक एक एक बात को देखा, सुना, जानने का प्रयत्न किया, उसको याद रक्खा, और दूसरों तक पहुँचाया इतिहास में उसका दूसरा उदाहरण विद्यमान नहीं है। हज़रत अली (रजियल्लाहु अन्ह) महा ईश-दूत के चचेरे भाई थे। हज़रत अबू हाला महा ईश-दूत के सौतेले पुत्र थे। माता आइशा महा ईश-दूत की धर्म-पत्नी थीं उन सब लोगों ने आप की जीवनचर्य्या तथा आचार व्यवहार का वर्णन किया है। हम उसका सारांश हदीस की पुस्तक 'शुमाएले तिर्मिज़ी' से अपने शब्दों में उपस्थित कर रहे हैं।

हज़रत अली कहते हैं कि महा ईश-दूत के घर के भीतर का समय तीन भागों में विभक्त था। एक भाग ईश्वर की इबादत उपासना के लिए, दूसरा भाग घर वालों के लिए, तीसरा भाग स्वयं अपने लिए, फिर तीसरे भाग को भी आप अपने और दूसरों के बीच बांट देते। हर प्रकार के लोग अपनी अपनी आवश्यकताएँ लेकर आप के पास आते, किसी की एक आवश्यकता होती, किसी की दो, और किसी की उससे भी अधिक, आप सभी की आवश्यकताओं की पूर्ति करते। लोग आप से इस्लाम सम्बन्धी बातें पूछते, उनके उत्तर देते और फ़रमाते— जो लोग उपस्थित हैं वह अनुपस्थित लोगों तक यह बातें पहुँचा दें, तथा फ़रमाते कि जो लोग अपनी आवश्यकताएं मेरे पास नहीं पहुँचा पाते उनको मेरे पास पहुँचाओ। जो व्यक्ति अपनी आवश्यकता शासक तक नहीं पहुँचा पाता, उसकी आवश्यकता जो व्यक्ति शासक तक पहुँचा देता है ईश्वर क़ियामत (प्रलय) के दिन उसे दृढ़ पग रखेगा अर्थात् वह उस दिन की भयंकरता से सुरक्षित रहेगा।

घर के बाहर महा ईश-दूत आने जाने और मिलने जुलने वालों से व्यर्थ बातें न करते, जिस से मिलते हंसमुख भाव से मिलते, जिससे वार्त्तालाप करते प्रेम और स्नेह से वार्त्तालाप करते, प्रतिष्ठित व्यक्तियों के प्रति सम्मान जनक तथा दीन हीनों से सहानुभूति पूर्ण व्यवहार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते, लोगों से उनकी आवश्यकताएं पूछते रहते, अच्छी बात की सराहना करते, बुरी बात की बुराई प्रकट करके उसकी मनाही कर देते। आप के निकट सब से अधिक सम्मानित तथा प्रतिष्ठित वह था जो सर्वसाधारण के साथ भलाई करने और उससे सहानुभूति रखने में सबसे अधिक था, लोग कहीं एकत्रित होते और आप जाते तो जहां जगह होती वहीं बैठ जाते, दूसरों को भी इसी का आदेश करते। जो लोग आप के पास बैठने उठने वाले थे उनके प्रति आप का ऐसा व्यवहार था कि किसी को यह अनुभव न होता कि आप के निकट उससे अधिक किसी का सम्मान है, यदि कोई व्यक्ति आप की सेवा में उपस्थित होता या किसी की कोई आवश्यकता होती तो जब तक वह व्यक्ति स्वयं आप से अलग न हो जाता आप उससे अलग न होते, जो व्यक्ति आप से कुछ मांगता उसकी मांग को यथा सम्भव रद न करते, यदि कुछ न होता तो नम्रतापूर्वक विवशता प्रकट कर देते।

आप की दयालुता और नम्रता सब के लिए समान थी, मानो आप पिता तुल्य थे और आप में सब का अधिकार था, आप की मजलिस (संगति) ज्ञान की, लज्जाशीलता की, सन्यम की, तथा सच्चाई की मजलिस थी, कोई ऊँची आवाज़ से न बोलता, कोई किसी का अपमान न करता, कोई किसी के दोषों का वर्णन न करता, सब एक समान होते, किसी की प्रतिष्ठा थी तो केवल सदाचार और ईश्वर भय के आधार पर। सब एक दूसरे के प्रति नम्रता का व्यवहार करते। बड़ों का सम्मान करते और छोटों से स्नेह करते, हर व्यक्ति अपनी आवश्यकता से दूसरों की आवश्यकता को प्राथमिकता देता था।

हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्ह) के पुत्र हज़रत हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्ह) कहते है कि मैंने अपने पिता से रसूलुल्लाह (स०) के विषय में पूछा कि अपने पास बैठने उठने वालों के साथ आप का व्यवहार कैसा था? तो आप ने बताया कि—आप सदा हंसमुख रहते

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे, स्वभाव के सरल और हृदय के नम्र थे, न आप चिल्लाकर बोलते थे न कोई भद्दी बात मुंह से निकालते थे, न किसी की बुराई करते थे, न अनुदार थे। आपने अपने सम्बन्ध में तीन बातें छोड़ दी थीं, एक किसी से लड़ना झगड़ना, दूसरे अपने को बड़ा समझना तीसरे निरर्थक बात में पड़ना। और दूसरों के सम्बन्ध की तीन बातें छोड़ दी थीं— न किसी को बुरा कहते, न किसी के दोष निकालते और न किसी की छिपी बात की खोज में रहते। आप ऐसी ही बात करते जिसमें पुण्य की आशा हो। जब आप कोई बात कहते तो सहाबा इस प्रकार सिर झुकाकर चुपचाप सुनते जैसे उनके सिरों पर चिड़ियां बैठी हों, जब आप चुप हो जाते तो लोग बात चीत करने लगते। लोगों के साथ आप भी मिल जुलकर बात चीत करते।

साधुमय जीवन

महा ईश-दूत का जीवन एक पिता हीन शिशु की अवस्था से आरम्भ हुआ। आप माता के गर्भ ही में थे कि पिता का देहान्त हो गया। आप केवल छ साल के थे कि माता की गोद से भी वंचित हो गये। आप का बाल्यकाल मक्का नगर के पहाड़ी मैदानों में पिता की छोड़ी हुई बकरियों और ऊँटों के चराने में व्यतीत हुआ। युवाकाल वाणिज्य व्यापार में बीता। चालीस साल की आयु में आप ईश-दूत पद पर नियुक्त हुये, एक धर्म भ्रष्ट असभ्य और अव्यवस्थित देश की धार्मिक, नैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक अवस्था का सुधार कितना कठिन और महान कार्य था, वह भी ऐसी स्थिति में कि आप के साथ कोई शक्ति न थी। आप अकेले भी थे और सर्वथा साधन हीन भी थे, इस कार्य भार के बाद तो आप के पास जीविका-उपार्जन के लिये समय ही न रह गया था, इसी अवस्था में आप को मक्का त्याग करके मदीना जाना पड़ा। इस प्रकार आप के पास जो कुछ था वह भी मक्के ही में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रह गया। मदीने में आप ६ महीने तक एक मदीना निवासी हज़रत अबू अय्यूब अनसारी के अतिथि रहे।

अपने लिये घर बनाने से पहले महा ईश-दूत को नमाज़ पढ़ने के लिये मस्जिद की चिंता थी, मस्जिद बनी, उसके बनाने में अपने अनुयायियों के साथ आप भी मज़दूर थे। मस्जिद किस शान की थी इसे भी देख लीजिये, दीवार कच्ची ईंटों की, खम्भे खजूर के तनों और छप्पर खजूर के पत्तों के, फ़र्श मिट्टी का, जिस पर बाद में कंकरियां डाल दी गईं ताकि पानी बरसने पर कीचड़ न हो जाय।

इसी मस्जिद से मिली हुई महा ईश-दूत के रहने के लिये कोठरियाँ बनाई गईं, पहले दो कोठरियाँ बनीं, फिर कुछ कोठरियाँ और बनीं, उसमें कुछ की दीवार ईंटों की थी और कुछ खजूर की टट्टियों की, उनकी लम्बाई दस दस हाथ की थी और चौड़ाई सात सात हाथ की, दीवार इतनी नीची थी कि खड़ा आदमी हाथ से छप्पर छूले, छप्पर खजूरों के पत्तों का था। दरवाज़ों में केवाड़ की जगह कम्बल पड़े थे, रात को दिया नहीं जलता था।

कैसा लग रहा है आप को महा ईश-दूत का जीवन? यही जीवन था जिस के सम्बन्ध में सत्य और न्याय के शत्रुओं ने प्रचार किया है कि आप बड़े विलास प्रेमी थे, अभी क्या, अभी तो आपने महा ईश-दूत (स०) के साधुमय जीवन की एक झलक भर देखी है, परन्तु आगे बढ़ने से पहले इस बात को ध्यान में रख लीजिये कि महा ईश-दूत ऐसे साधु-सन्यासी न थे जैसे साधु-सन्यासी हम अपने देश में देखते हैं या जिन के वर्णन पुस्तकों में पढ़ते हैं, आप गृहस्थ थे पत्नी सन्तान वाले थे, समाज के बीच रहते थे, आप शिक्षक भी थे उपदेशक भी, सुधारक भी, सैनिक भी थे सेनापति भी, नियम निर्माता भी थे और न्यायाधीश भी, अरब के विजेता भी थे और शासक भी। क्या कभी कोई ऐसा साधु सन्यासी भी संसार में हुआ?

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी अभी आप देख आये हैं महा ईश-दूत का घर कैसा था ? अरब के शासक हो जाने के बाद भी आप के जीवन में नाम मात्र को भी परिवर्तन नहीं हुआ, राजमहल नहीं बना, सिंहासन नहीं बना, मुकुट नहीं बना, कोठरियाँ भी गिराकर नई नहीं बनीं, अब भी वही खजूर के पत्तों का छप्पर था, वही दर्वाज़ों पर केवाड़ की जगह कम्बल के पर्दे थे, उसी प्रकार रात को घर में दीपक न जलते थे, मस्जिद भी वही थी। महा ईश-दूत (स०) इसी में बैठकर अरब पर शासन करते थे। क्या संसार में कोई ऐसा शासक भी हुआ है ?

वस्त्र की दशा

महा ईश-दूत का साधारण पहनावा केवल कुर्ता और तहमद होता था। महा ईश-दूत की धर्म पत्नी हज़रत उम्मे सल्मा (र०) कहती हैं कि अल्लाह के रसूल जो कपड़ा पहना करते थे उन में आपको कुरता अधिक पसन्द था। (शमाइल तिर्मिज़ी)

हज़रत उस्मान (र०) आधी पिंडली तक तहमद बाँधा करते थे, आप फ़रमाया करते थे कि हज़रत रसूलुल्लाह (स०) का तहमद भी इतना ही ऊँचा होता था। (शमाइले तिर्मिज़ी)

हज़रत हुज़ैफ़ा बिन 'यमान' कहते हैं कि हज़रत रसूलुल्लाह (स०) ने अपनी पिंडली का गोश्त पकड़ कर फ़रमाया कि तहमद (या पाजामा) की जगह यही है। और अगर तुम को यह पसन्द न हो तो कुछ और नीचा कर दो लेकिन यह भी पसन्द न हो तो (समझ लो कि) टखनों में तहमद का कुछ (हिस्सा) नहीं है। (शमाइले तिर्मिज़ी)

मतलब यह कि महा ईश-दूत केवल आवश्यकता के अनुसार कपड़े पहनते थे, शान दिखाने के लिए कपड़े पहनने को उचित नहीं समझते थे। अरब के प्रतिष्ठित लोग बड़ाई जताने के लिए इतना लम्बा तहमद बांधते थे कि घुट्टी ढक जाती थी महा ईश-दूत (स०) ने इसको वर्जित ठहरा दिया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह तो था महा ईश-दूत का पहनावा, लेकिन यह कपड़े भी पर्याप्त न थे और यह भी अधिकतर पेवंद लगे होते थे।

हज़रत अनस बिन मालिक (र०) कहते हैं कि हज के अवसर पर महा ईश-दूत (स०) जिस ऊँट पर सवार थे उसका कजावा बिल्कुल फटा पुराना था और आप जो चादर ओढ़े हुए थे उसकी क़ीमत चार दिर्हम (एक रुपया के लगभग) भी न थी (शमाइल तिर्मिज़ी)

महा ईश-दूत ने यह हज अपने स्वर्गवास से कुछ महीने पहले किया था, हज़रत बर्दा (र०) कहते हैं कि एक बार हज़रत आइशा (महा ईश-दूत की धर्म पत्नी) ने मेरे सामने पेवन्द लगी हुई एक चादर और मोटे कपड़ों की एक लुंगी निकाली और कहा कि अल्लाह के रसूल के स्वर्ग वास के समय यही दो कपड़े आप के शरीर पर थे। (शमाइले तिर्मिज़ी)

हज़रत आइशा (र०) ही कहती हैं कि महा ईश-दूत का कपड़ा कभी तह करके रखा नहीं गया यानी एक जोड़ा से अधिक होता ही न था जो तह करके रखा जाए।

(सीरतुन् नबी भाग २)

भोजन की अवस्था

अब आइए महा ईश-दूत (स०) के भोजन की अवस्था देखिए।

महा ईश-दूत (स०) के एक सहाबी नुअमान बिन बशीर ने एक दिन अपने साथियों से कहा—तुम लोग जितना चाहते हो खाते पीते हो परन्तु मैंने तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा है कि उनको पेट भर सूखी खजूरें भी उपलब्ध न थीं। (तिर्मिज़ी)

हज़रत अब्दुल्लाह (र०) महा ईश-दूत के चचा हज़रत अब्बास (र०) के पुत्र थे वह कहते हैं कि महा ईश-दूत (स०) के घर में कई

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कई रातें इस अवस्था में व्यतीत हो जाती थीं कि आप और आप के घर वाले भूखे सो रहते थे, कोई चीज़ खाने की रहती ही न थी। आप के घर वालों की भोजन सामग्री अधिकांश जौ की रोटी होती थी। (तिर्मिज़ी)

यह जौ की रोटी भी वे चाले हुए आटे की होती थी, वहाँ चलनी थी ही नहीं, फूंक मार मारकर भूसी उड़ा दी जाती थी।

महा ईश-दूत के घर में दो दो महीने तक चूल्हे में आग न जलती थी। आप की धर्म पत्नी हज़रत आइशा (र०) ने एक दिन अपने भतीजे हज़रत उर्वा बिन ज़ुबैर (र०) से इसकी चर्चा की तो उन्होंने पूछा—फिर गुज़ारा कैसे होता था? माता आइशा ने उत्तर दिया—केवल खजूर और पानी पर, कभी कभी पड़ोसी बकरी का दूध भेज देते तो हम उसे पी लेते। (तिर्मिज़ी)

यही माता आइशा कहती हैं कि—महा ईश-दूत (स०) ने मदीने आने से लेकर स्वर्गवास काल तक कभी निरंतर दो समय पेट भर भोजन नहीं किया। (बुख़ारी)

महा ईश-दूत (स०) के एक निकटवर्ती सहाबी हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि०) थे। उनके एक मित्र नोफ़िल बिन अयास कहते हैं कि एक दिन अब्दुर्रहमान हम को अपने घर ले गये। उन्होंने पहले स्नान किया, उसके बाद भोजन लाया गया जिसमें रोटी थी और गोश्त था। अब्दुर्रहमान भोजन देख कर रोने लगे, हमने रोने का कारण पूछा तो कहा अल्लाह के रसूल का स्वर्गवास हो गया परन्तु आप और आप के घर वालों ने जौ की रोटी भी पेट भर नहीं खाई। मेरे विचार से हम लोगों की आयु किसी अच्छे कार्य के लिये नहीं बढ़ाई गई है। (शमाइले तिर्मिज़ी)

ऐसी ही एक हृदय विदारक घटना माता आइशा (रज़ि०) की है। हज़रत मसरूक़ महा ईश-दूत के सहाबी थे। वह कहते हैं कि मैं एक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन हज़रत आइशा (रजि०) के घर गया, उन्होंने मेरे लिये खाना मँगवाया, खाना देखकर कहने लगीं—मैं कोई चीज़ पेट भर खाती हूँ तो रोने को जी चाहता है और रोती भी हूँ। कारण पूछा तो कहा, मुझे वह अवस्था याद आ जाती है जिसमें अल्लाह के रसूल ने संसार से प्रस्थान किया। खुदा की कसम आप ने किसी दिन भी पेट भर कर गोश्त रोटी नहीं खाई। (तिर्मिज़ी)

महा ईश-दूत (स०) के एक निकटवर्ती सहाबी हज़रत अनस (रजि०) थे जो बालपन ही से आप की सेवा किया करते थे और दस साल तक सेवा की थी वह कहते हैं कि हम एक दिन महा ईश-दूत की सेवा में उपस्थित हुए तो देखा आप ने पेट को कपड़े से कसकर बाँध रखा है कारण पूछा तो एक व्यक्ति ने बताया आप ने भूक की वजह से पेट बाँध रक्खा है। (सीरतुन्नबी मुस्लिम से)

यही हज़रत अनस (रजि०) कहते हैं कि—एकबार महा ईश-दूत (स०) की सेवा में खजूरें लाई गईं आप उनको खाने लगे आप भूख की वजह से सीधे बैठ न सकते थे कुहनियों से टेक लगाये हुए थे। (तिर्मिज़ी)

महा ईश-दूत (स०) के एक सहाबी हज़रत अबू तलहा कहते हैं कि एक दिन मैंने महा ईश-दूत (स०) को देखा कि मस्जिद में फर्श पर लेटे हुये हैं और भूख की पीड़ा से बार-बार करवट बदल रहे हैं। (सीरतुन्नबी-मुस्लिम से)

अधिकतर ऐसा होता कि महा ईश-दूत (स०) प्रातः समय घर में पूछते आज कुछ खाने को है ? जवाब मिलता "नहीं" आप फरमाते "अच्छा मैंने व्रत रख लिया।" (सीरतुन्नबी जिल्द २)

बिस्तर की अवस्था

महाईशदूत की धर्म पत्नी हज़रत आइशा (रजि०) कहती हैं कि अल्लाह के रसूल जिस बिस्तर पर सोया करते थे वह चमड़े का था और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसमें खजूर की छाल भरी हुई थी, आप की दूसरी धर्म पत्नी हज़रत हफ़सा (रजि०) से पूछा गया कि तुम्हारे घर में अल्लाह के रसूल का बिस्तर कैसा था तो उन्होंने बताया कि एक कम्बल था जिसको हम दोहरा करके बिछा देते थे आप इसी पर सोते थे। एक दिन हमने सोचा इसे चार तह कर दें तो ये कुछ और नर्म हो जायेगा, यह सोच कर हमने चार तह कर दिया प्रातः समय आपने पूछा—तुमने रात को क्या बिछा दिया, था ? हमने कहा—आप का वही बिस्तर था हमने उसको चार तह कर दिया था ताकि नर्म हो जाय। आप ने फ़रमाया उसको फिर पहले ही की तरह कर दो, उसकी नर्मी ने आज रात को मुझे नमाज़ से रोक दिया। (तिर्मिज़ी)

महाईशदूत के साधु मय जीवन का वृत्तान्त लिखते हुये हमारे मन में बार-बार यह सोच उत्पन्न हुई कि कैसे थे महा ईश-दूत (स०) और कैसा था उनका जीवन ? वह वास्तव में साधु सन्यासी तो न थे। महा ईश-दूत भी थे और अरब के शासक भी। आप के अनुयायी और सहचर ऐसे श्रद्धालु थे कि अपना सब कुछ अर्पण कर देने में अपने लोक परलोक का कल्याण विश्वास करते थे। महा ईश-दूत चाहते तो स्वयं अपने सुख विलास का उत्तम से उत्तम प्रबन्ध कर सकते थे फिर भी आप का ऐसा साधु मय जीवन ? ऐसा भोजन, ऐसा वस्त्र, और ऐसा बिस्तर ? क्या आप के भीतर भी ऐसी ही सोच उत्पन्न नहीं होती ? हमारा तो विचार है कोई भी सहृदय व्यक्ति हमारी ही तरह सोचे बिना नहीं रह सकता। आगे आप की दान शीलता का वर्णन आयेगा। इस जीवन के साथ ऐसा दान शील महा ईश-दूत के सिवा कौन हो सकता है ?

परलोक वादिता

महा ईश-दूत (स०) ने मानव जाति को जीवन के एक नवीन ध्येय, नवीन दृष्टि कोण और नवीन विधि से अवगत किया। आप से पहले मनुष्य दो वर्गों में बँटे हुए थे एक वर्ग ने सांसारिक जीवन ही

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को जीवन लक्ष्य बना लिया था। वह सब कुछ इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए करता था। दूसरे वर्ग ने सांसारिक जीवन से विरक्ति ग्रहण कर ली थी। महा ईश-दूत ने ऐसे जीवन लक्ष्य और जीवन विधि से अवगत किया जिसमें लोक और परलोक दोनों का समन्वय था, आपने जीवन का लक्ष्य तो बनाया परलोक को परन्तु लौकिक जीवन से विरक्ति ग्रहण नहीं की, इतना ही नहीं, संसार से विरक्ति को इस्लाम के विरुद्ध ठहराया। आपने यह तथ्य समझाया कि ईश्वर ने संसार को इसलिए नहीं बनाया है कि मनुष्य उसका परित्याग करके सन्यासी बन जाए, और जंगलों गुफाओं या मठों में जा बैठे, उसको परिवार के भरण पोषण के लिये धन भी कमाना चाहिए, किसी का मुहताज न होना चाहिए, किसी के अधीन न रहना चाहिए। समाज और शासन का संचालन करना चाहिए और इन सब के साथ परलोक को अपना अंतिम ध्येय मान कर जीवन व्यतीत करना चाहिए। इस ध्येय से मनुष्य का परलोक ही सुख-मय न होगा, इस का लौकिक जीवन भी सफल और सुख मय होगा इसलिये कि मनुष्य को इसकी चिंता लगी रहेगी कि वह संसार ही का होकर न रह जाए कि उसका परलोक जीवन नष्ट हो जाए, इसलिए वह सत्यवादी होगा, न्यायशील होगा, सदाचारी होगा, त्यागी तथा परोपकारी होगा, अत्याचार, दुराचार, तथा अनधिकार चेष्टा से बचेगा।

सारे अरब देश पर महा ईश-दूत का अधिकार स्थापित हो गया, चारों ओर से मदीने में धन आने लगा, मुसल्मानों की निर्धनता दूर हो गई, वह सुखी जीवन व्यतीत करने लगे। महा ईश-दूत की धर्मपत्नियों का सारा जीवन रूख-सूखा खाते, उपवास करते, और फटा पुराना पहनते व्यतीत हुआ था, वह भी मनुष्य थीं वह भी स्वभावतः सुखी जीवन की अभिलाषा रखती थीं। अतः उन्होंने महा ईश-दूत (स०) से प्रार्थना की कि अब उनको भी अच्छा खाने पहनने को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिले। परन्तु महा ईश-दूत (स०) इसके लिए तय्यार न हुए कि अपने जीवन में किसी प्राकर का परिवर्तन करें। अतः जब धर्मपत्नियों ने अपनी माँग पर आग्रह किया तो महा ईश-दूत (स०) ने रुष्ट होकर प्रतिज्ञा कर ली कि आप एक महीने तक उनसे पृथक रहेंगे। इस प्रतिज्ञा के अनुसार आपने एक महीने के लिए पृथकता ग्रहण कर ली। हज़रत आइशा (र०) की कोठरी के ऊपर एक छोटा सा कोठा था, आप उसी पर रहने लगे। लोगों में यह भ्रम फैल गया कि आपने अपनी धर्मपत्नियों को तलाक़ दे दी। आपकी एक धर्मपत्नी हज़रत हफ़सा, हज़रत उमर (र०) की पुत्री थीं, वह महा ईश-दूत से भेंट करने आए तो देखा, महा ईश-दूत केवल एक लुङ्गी बाँधे हुए हैं, एक खुर्री चारपाई पड़ी हुई है, सरहाने एक तकिया रखा हुआ है जिसमें खजूर की छाल भरी हुई है, एक तरफ़ मुट्ठी भर जौ रखा हुआ है, एक कोने में किसी जानवर की खाल पड़ी हुई है। कुछ पानी की छोटी मशक की खालें हैं जो महा ईश-दूत (स०) के सर के पास लटक रही हैं।

हज़रत उमर महा ईश-दूत के जीवन से कुछ अनभिज्ञ न थे फिर भी इस हृदयविदारक दृश्य से इतने प्रभावित हुए कि उनकी आँखों से आँसू जारी हो गए। महा ईश-दूत (स०) ने रोने का कारण पूछा—उन्होंने कहा—ऐ अल्लाह के रसूल! मैं क्यों न रोऊँ? आपके शरीर पर चारपाई के बाध के चिह्न पड़े हुए हैं। यह आपके सामान की कोठरी है और उसमें जैसा कुछ सामान है उसे देख रहा हूँ। शाम और ईरान के सम्राट क़ैसर और किसरा तो सांसारिक सुख विलास का भोग करें और आपकी यह दशा?

महा ईश-दूत (स०) ने फ़रमाया—ख़त्ताब के पुत्र! (उमर) क्या तुम इससे प्रसन्न नहीं कि क़ैसर और किसरा सांसारिक सुख भोगें और हम परलोक सुख? (सीरतुन्नबी)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब महा ईश-दूत (स०) के निश्चय को एक महीना हो गया तो ईश्वर की ओर से आदेश आया कि आप अपनी धर्म पत्नियों से कह दें कि यदि तुम संसार और सांसारिक सुख चाहती हो तो मैं तुमको भलीभाँति पृथक कर दूँ और यदि तुम अल्लाह और रसूल की प्रसन्नता और परलोक सुख चाहती हो तो जान लो कि सुकर्मियों के लिए अल्लाह ने परलोक में महान पुरस्कार का प्रबन्ध कर रखा है।

ईश्वरीय ग्रन्थ मान्य क़ुर्आन अध्याय अहज़ाब में यह आदेश विद्यमान है।

महा ईश-दूत (स०) की धर्म पत्नियाँ महा ईश-दूत की धर्म पत्नियाँ थीं। उन्होंने सिर झुका कर स्वीकार कर लिया कि जिस बात में अल्लाह और रसूल की प्रसन्नता है वह भी उसी से प्रसन्न हैं।

महा ईश दूत के सहाबा की अभिलाषा थी कि आप साधारणतः नहीं तो ईद बकरीद, जुमा और जब कहीं के प्रतिनिधि आया करें तो इन विशेष अवसरों पर अच्छे कपड़े पहन लिया करें। अतः एक रोज़ हज़रत उमर (रज़ि) महाईशदूत (स.) के साथ थे। रेशमी हुल्ला बिकते देखा। निवेदन किया ऐ अल्लाह के रसूल ! उस को खरीद लें, जुमा और प्रतिनिधियों के आगमन के अवसर पर इसे पहना करें। आपने फरमाया उसको वह पहने जिसका परलोक में कोई हिस्सा न हो। (सीरतुन्नबी जिल्द २)

महाईश दूत (स०) सहाबा से फरमाया करते के दुनिया में मनुष्य को इतना पर्याप्त है जितना एक मुसाफिर को रास्ते का सामान। एक बार आप चटाई पर लेटे हुए थे, उठे तो शरीर पर चटाई का चिह्न पड़ गया था। सहाबा ने निवेदन किया कि ऐ अल्लाह के रसूल, क्या हम लोग कोई गद्दा बनवाकर उपस्थित करें ? आपने फरमाया मुझ को दुनिया से क्या ग़रज़ हैं ? मेरा दुनिया से इतना ही सम्बन्ध है जितना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस सवार को जो थोड़ी देर के लिए रास्ते में किसी वृक्ष की छाया में ठहर जाता है फिर उसको छोड़ कर आगे बढ़ जाता है—

(तिर्मिज़ी)

पाठक गण महाईशदूत (स०) के जीवन चरित्र के विभिन्न चरित्रों का अध्ययन करते हुये इस स्थिति को अवश्य ध्यान में रखा करें कि क्या ऐसा व्यक्तित्व सच्चे महाईश दूत के सिवा किसी दूसरे व्यक्ति का हो सकता है ?

दान शीलता

आप ने ऊपर महाईश दूत का जीवन देखा, अरब के शासक का और ऐसा साधु मय जीवन ! इसके साथ आप कितने दान शील थे, इसे देखिए। महाईश दूत (स०) के चचा हज़रत अब्बास (र०) कहते हैं कि महा ईश दूत ने जीवन पर्यंत किसी याचक की याचना के उत्तर में 'नहीं', शब्द का प्रयोग नहीं किया। (बुखारी)

एक बार एक व्यक्ति आपकी सेवा में उपस्थित हुआ, देखा कि आपकी बकरियों का रेवड़ दूर तक फैला हुआ है, उस ने बकरियां मांगी और आपने वह सब बकरियां दे दी, उस ने अपने परिवार में जाकर कहा—लोगों मुसलमान हो जाओ, मुहम्मद (स०) ऐसे दान शील हैं कि निर्धन हो जाने की चिन्ता नहीं करते। (बुखारी)

अपरिचित लोग भी महाईश दूत की दान शीलता से परिचित थे और वह आप से जिस प्रकार दान मांगते थे इस प्रकार क़र्ज़ख़ाह क़र्ज़ नहीं मांगता। एक बार आप नमाज़ पढ़ने जा रहे थे कि एक देहाती आया कहने लगा मेरी एक आवश्यकता रह गई है उसे पूरी कर दीजिए नहीं तो मैं भूल जाऊंगा।

आप उसे घर ले गए और उसकी आवश्यकता पूरी कर के आए तो नमाज़ पढ़ी। (बुख़ारी)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य का स्वभाव है कि उस को धन प्रिय होता है, वह उसको बचा कर रखता है। महा ईश दूत (स०) के लिए यह असह्य था कि संध्या हो जाए और आप के घर में कोई धन रह जाए। महा ईश दूत की धर्म पत्नी हज़रत सुफ़य्या (स०) कहती हैं कि एक दिन आप घर में आए तो मुख मंडल चिंतित था। मैं ने पूछा—"ए अल्लाह के रसूल! क्या बात हैं ? ख़ैरियत तो है ?

आप ने फ़रमाया—कल सात अशर्फ़ियां आईं वह बिस्तर पर पड़ी रह गईं। (मुसनद इब्ने हंबल)

महा ईश दूत (स०) इतने चिंतित उन अशर्फ़ियों को दान कर देने के लिए थे।

एक बार महा ईश दूत अस्र की नमाज़ पढ़ कर जो कुछ दिन रहे संध्या से पहले पढ़ी जाती है, प्रति दिन के विपरीत घर में चले गए और फिर जल्दी सेवा हर निकल आए, लोगों ने इस प्रकार जाने और चले आने का कारण पूछा तो फ़रमाया कि—मुझे नमाज़ में ख़याल आया कि घर में कुछ सोना पड़ा रह गया है मुझे चिन्ता हुई कि ऐसा न हो रात हो जाए और वह पड़ा रह जाए उसे दान कर देने को कह आया हूँ। (बुख़ारी)

जंगलों और पहाड़ों में रहने वाले भी जिन को 'बद्दू' कहते हैं महाईश दूत की दान शीलता से परिचित थे। आप हुनैन के युद्ध से लौट रहे थे, आप को जो कुछ मिला था उसे दान कर चुके थे। बद्दुवों को पता लगा कि आप युद्ध से लौट रहे हैं तो आ आ कर आप को घेर लिया, आप भीड़ से घबरा कर एक वृक्ष की आड़ में खड़े हो गए। बद्दुवों ने आप की चादर पकड़ ली वह खींचा तानी में बद्दुवों के हाथ में चली गई। आप ने फ़रमाया—मेरी चादर दे दो, ख़ुदा की कसम! इन जंगली वृक्षों के बराबर भी मेरे पास ऊंट होते तो मैं दान कर देता।" (बुख़ारी)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक बार महा ईश दूत सहाबा के बीच विराजमान थे, एक बद्दू आया और आप की चादर ज़ोर से खींच कर बोला—यह माल न तुम्हारा है न तुम्हारे पिता का। मुझे एक ऊंट कोई सामग्री दो, " आप ने उस के ऊंट को खजूरों से लदवा दिया। (बुख़ारी)

दान शीलता के साथ महा ईश दूत की नम्रता, दयालुता और सहन शीलता पर भी विचार कीजिए। तनिक सा संकेत कर देते तो सहाबा बद्दूओं को मार कर भगा देते, परन्तु वह आप की दान शीलता और दयालुता से परिचित थे इस लिए चुप रहे।

एक बार बहरैन प्रांत से कर का बहुत सा माल आया, इतना माल अब से पहले कभी न आया था, महाईश दूत को सूचना हुई तो आज्ञा दी कि मस्जिद के प्रांगण में डाल दो, नमाज़ के लिए मस्जिद आए तो माल की ओर दृष्टि भी न डाली, नमाज़ के बाद सब माल बंटवा दिया, और कपड़े झाड़ कर उठ खड़े हुए। (बुख़ारी)

दान करने में घर की खाने पीने की साधारणतः सामग्री समाप्त हो जाती तो याचकों की याचना क़र्ज़ ले कर भी पूरी कर देते। एक बार फ़िदक के रईस ने चार ऊंट गल्ला भेजा, आप पर एक यहूदी का क़र्ज़ था, आप के घर के प्रबन्धक आप के सेवक हज़रत बिलाल (र०) थे, उन्होंने गल्ले को बाजार में बेच कर वह क़र्ज अदा किया। महा ईश दूत (र०) ने पूछा—कुछ बच तो नहीं रहा ? उन्होंने उत्तर दिया—कुछ बच गया है। आप ने फ़रमाया—जब तक कुछ भी बाकी रहेगा मैं घर में न जाऊंगा। हज़रत बिलाल ने निवेदन किया—मैं क्या करूं, कोई याचक ही नहीं हैं, आप उस रात घर में नहीं गए मस्जिद ही में रहे दूसरे, दिन हज़रत बिलाल (र०) ने सूचना दी कि खुदा ने आप को भार मुक्त कर दिया, बाक़ी भी बंट गया। आप ने खुदा का शुक्र अदा किया और घर में गए।

एक बार एक सहाबी ने महाईश दूत (स०) के घर के ख़र्च के संबंध

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में हज़रत बिलाल से पूछा तो बताया कि आप के पास तो कुछ रहता ही न था। खर्च का प्रबन्ध मेरे ज़िम्मे था, कोई भूखा आ जाता तो आप उस के खिलाने पिलाने के लिए मुझे आज्ञा देते, मैं कहीं से उधार लेकर उसे खिला पिला देता, कोई कपड़े का जरूरत मन्द आता तो आप उसके लिए भी मुझे आज्ञा देते, मैं किसी से उधार ले कर कपड़े का प्रबन्ध कर देता' बस इसी तरह काम चलाता था।

यह महा ईश दूत की दान शीलता का पूरा वर्णन नहीं है, केवल परिचय मात्र है, यह बात ध्यान में रहे कि जब आप अरब के शासक हो गए थे, चारों ओर से धन आ रहा था, महा ईश दूत (स०) इसी प्रकार दान कर रहे थे। जब मुसल्मान सुखी जीवन व्यतीत करने लगे थे, इस अवस्था में भी महा ईश दूत (स०) साधु मय जीवन व्यतीत कर रहे थे।

वचन पालन

वचन पालन मनुष्य का पवित्र कर्त्तव्य है, परन्तु कितने मनुष्य हैं जो व्यावहारिक रूप में इसका विचार करते हैं ? और विशेष अवस्था में सत्यवान व्यक्ति भी वचन च्युत हो जाते हैं परन्तु महा ईश-दूत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कठिन से कठिन परिस्थिति में भी वचन से विचलित न होते थे वह प्रत्येक अवस्था में वचन पालन को अपना धर्म समझते थे।

मक्का निवासियों और महा ईश-दूत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) में जो पहला युद्ध हुआ वह बद्र का युद्ध कहलाता है, इस युद्ध में एक हज़ार शत्रु थे और केवल ३१३ मुसल्मान, जिन के पास न पर्याप्त सवारी थीं न हथियार और न खाद्य सामग्री। और शत्रु के पास यह सब चीज़ें आवश्यकता से अधिक थीं, बड़ी विकट परिस्थिति थी। इस अवस्था में मक्के के दो मुसल्मान जिनके नाम हुज़ैफ़ा बिन यमान और अबू सुहैल थे युद्ध क्षेत्र में पहुँचे। ऐसे समय में दो सहायकों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का जो महत्व था उसके बताने की आवश्यकता नहीं। परन्तु महा ईश-दूत की दृष्टि में इससे अधिक महत्व था वचन का, इसका विवरण यह है कि मार्ग में उन दोनों सज्जनों का मक्का निवासी शत्रुओं से सामना हो गया था और उन्होंने यह वचन देने पर उनको छोड़ा था कि वह मदीने जा कर युद्ध में भाग न लेंगे। महा ईश-दूत ने दोनों सज्जनों से यह वर्णन सुना तो इस परिस्थिति में भी वचन भंग को उचित न समझा, दोनों सज्जनों को युद्ध में भाग लेने की अनुमति नहीं दी। फ़र्माया—हमारे लिए ईश्वर की सहायता पर्याप्त है।

आगे चल कर महा ईश-दूत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और मक्का निवासियों के बीच सन्धि हुई जो "सुल्ह हुदैबिया" के नाम से प्रसिद्ध है। इस समय कुछ ऐसी परिस्थितिं थी कि मक्का निवासियों की यह अनुचित शर्त भी स्वीकार करनी पड़ी कि यदि मदीने का कोई व्यक्ति भागकर मक्के आएगा तो वह लौटाया न जाएगा परन्तु मक्के का कोई व्यक्ति भागकर मदीना जाएगा तो वह लौटा दिया जाएगा। यह संधि-पत्र अभी लिपिबद्ध न हुआ था कि मक्के के एक सर्दार सुहैल के पुत्र हज़रत अबू जन्दल जो मुसल्मान हो गए थे इस दुरावस्था में पहुँचे कि इनके पैरों में बेड़ियां पड़ी थीं और उनके शरीर पर घावों के चिह्न थे वह आकर सबके सामने गिर पड़े, बड़ा हृदय विदारक दृश्य था। हज़रत अबू जन्दल के पिता सुहैल ने कहा—हमारे पुत्र को सन्धि के अनुसार लौटा दिया जाए।

महा ईश दूत ने कहा—अभी तो सन्धि पत्र लिपि बद्ध नहीं हुआ है, सुहैल बोला तब सन्धि नहीं हो सकती। अबू जन्दल ने अपने शरीर के घाव दिखाते हुए दुहाई दी। "मुसल्मान भाइयों ! तुम देख रहे हो मुझपर कितना अत्याचार हुआ है। तुम मुझे फिर इन्हीं अत्याचारियों के हवाले कर रहे हो ?" मुसलमान तड़प उठे परन्तु महाईश दूत वचन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से विचलित न हुए। अबू जन्दल को सांत्वना देते हुए फरमाया—विचलित न हो, शीघ्र ही ईश्वर मुक्ति का कोई मार्ग निकाल देंगे।

यह तो एक विशेष परिस्थिति से सम्बन्धित घटना थी, महाईशदूत की सांत्वना की कैसे पूर्ति हुई इसे देखिए। मक्का निवासी वहां के असहाय मुसलमानों पर निरंतर अत्याचार कर रहे थे। इन्हीं असहाय अत्याचार पीड़ितों में एक सज्जन अबूबुसैर उतबा बिन उसैद थे। वह भागकर मदीने पहुँचे। मक्का निवासियों ने उनकी वापसी के लिये दो व्यक्ति मदीना भेजे। महा ईश दूत के सम्मुख फिर वही समस्या थी। एक ओर अत्याचार पीड़ित मुसलमान दूसरी ओर वचन, महाईशदूत ने कहा–अबूबुसैर तुम मक्के वापस चले जाओ, उन्होंने निवेदन किया आप मुझे शत्रुओं के पास लौटा रहे हैं। वह मुझे इस्लाम त्याग पर बाध्य करेंगे। आपने फरमाया—घबराओ नहीं ईश्वर जल्द ही कोई मार्ग निकाल देगा।

अबूबुसैर मदीने से लौटे तो मार्ग में मक्का निवासी दो व्यक्तियों में से एक को मार डाला। दूसरा भाग कर मदीने पहुँचा, उसके बाद अबूबुसैर भी पहुँचे, महाईश दूत से निवेदन किया—"आपने अपना वचन पूरा कर दिया अब मैं क्या करता हूँ उसका आप पर कोई दायित्व नहीं," यह कह कर मदीने से चले गए और समुद्र के किनारे एक स्थान पर निवास ग्रहण किया जहाँ से मक्का निवासी व्यापार के लिए शाम आया जाया करते थे जब मक्के के अत्याचार पीड़ित मुसलमानों को पता चला कि एक शरण स्थान मिल गया है तो वह मक्के से भाग भाग कर वहाँ पहुँचने लगे यहाँ तक कि मुसलमानों का एक समूह एकत्रित हो गया, अब मक्का निवासियों का जो तिजारती कार्वां उधर से निकलता यह लोग उसे लूट लेते और उसी से जीविका चलाते, मक्का निवासियों ने बाध्य होकर सन्धि की अनुचित शर्त वापस ले ली और अबू जन्दल और उनके साथी मक्के से मदीने चले आए।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्याय शीलता

कोई सुव्यवस्थित शासन हो और कोई उसका न्यायाधीश हो तो उसका न्याय करना कठिन नहीं होता। न्यायाधीश नियम के अनुसार न्याय करता है। अरब में न पहले से कोई शासन था और न इस्लामी शासन अभी पूर्ण और सुव्यवस्थित हुआ था। महाईशदूत (स०) को सैकड़ों गोत्रों से काम पड़ता था जिनमें परस्पर शत्रुता थी, जिसके विरुद्ध फ़ैसला होता वह शत्रु बन जाता परन्तु इस परिस्थिति में भी महाईशदूत (स०) वही करते जो न्याय की मांग होती, आपका फ़ैसला ऐसे व्यक्तियों के विरुद्ध भी पड़ जाता जिनकी महत्व पूर्ण सेवायें होती, मक्का नगर विजय हो चुका था, ताएफ़ नगर विजय नहीं हो सका था, 'सख़्र' एक रईस थे, उन्होंने ताएफ़ पर घेरा डालकर नगर निवासियों को महाईशदूत (स०) से सन्धि करने पर विवश कर दिया था, यह सख़्र की साधारण सेवा न थी।

उन पर ताएफ़ के एक सरदार मुग़ीरा बिन शुअबा ने दावा किया कि सख़्र ने उनके कुवां को अपने अधिकार में कर लिया है और बनू सलीम गोत्र का दावा था कि हमारे मुसलमान होने से पहले सख़्र ने हमारे पानी के स्रोत पर अधिकार कर लिया हैं, अब हम मुसलमान हैं, हमारा स्रोत वापस दिला दिया जाये। महा ईश दूत (स०) ने दोनों मुआमलों में सख़्र के विरुद्ध फैसला कर दिया। लेकिन लज्जा से महाईश दूत का मुख मंडल लाल हो उठा क्योंकि सख़्र को ताएफ़ के विजय का कोई पुरस्कार तो मिला नहीं उल्टे दो दो मुकदमों में उनको हानि उठानी पड़ी। महा ईश दूत (स०) ने इस परिस्थिति को सहन कर लिया परन्तु न्याय के विरुद्ध नहीं किया।

यहूदियों की बस्ती ख़ैबर को मुसलमानों ने फ़तह कर लिया था परन्तु भूमि इस शर्त पर यहूदियों ही के पास छोड़ दी गई थी कि वह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधी पैदावार मुसलमानों को दे दिया करेंगे। महा ईश-दूत (स०) के एक सहाबी अब्दुल्लाह खजूरों की बँटाई के लिये खैबर गये। उनके भाई भी साथ थे अब्दुल्लाह एक गली से जा रहे थे कि किसी ने उनको क़त्ल करके उनकी लाश गड्ढे में डाल दी, उनके भाई ने खून का दावा किया महा ईश-दूत (स०) ने पूछा तुम क़सम खा सकते हो कि अब्दुल्लाह को यहूदियों ने क़त्ल किया? उन्होंने कहा मैंने आँख से नहीं देखा। आपने फ़रमाया तो यहूदियों से क़सम खिलायी जाये। उन्होंने कहा—यहूदियों का क्या एतबार? वह तो सौ बार झूटी क़सम खा लेंगे।

वर्तमान समय विद्या, ज्ञान, सभ्यता और मानवता का समय माना जाता है। इस समय में दूसरे देशों की बात छोड़िये, हमारे ही देश में साधारण-साधारण सी बात पर पूलिस बस्ती की बस्ती के बूढ़ों और स्त्रियों तक पर मन माने अत्याचार करती है। परन्तु महा ईश-दूत (स०) की न्याय शीलता को देखिये, खैबर में यहूदियों के सिवा कोई दूसरी जाति न थी, यहूदी मुसलमानों के शत्रु भी थे। परन्तु आँखों देखी गवाही न थी, इस लिये महा ईश-दूत (स०) ने अब्दुल्लाह के खून के बदले सौ ऊँट सरकारी कोष से दिलवा दिये। यहूदियों का बाल तक बीका न हुआ।

तारिक़ मुहार्बी अपनी घटना वर्णन करते हैं, वह कहते हैं कि हम अपनी बस्ती के कुछ आदमी मदीने की ओर चले, हमारे साथ स्त्रियाँ भी थीं। हमने मदीने के निकट पहुँच कर पड़ाव किया। एक व्यक्ति सफेद वस्त्र पहने हुये आए, हमें सलाम किया, हम ने जवाब दिया। एक ऊँट का मूल्य पूछा हमने बताया, वह हमारे बताये मूल्य ही को स्वीकार करके ऊँट लेकर चले गये, उनके जाने के बाद हम एक दूसरे को दोषी ठहराने लगे कि एक अपरिचित व्यक्ति मूल्य दिये बिना ही ऊँट ले गया, एक स्त्री बोली तुम लोग चिन्ता न करो मैंने ऐसा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्द्रमा के समान प्रकाशमान किसी का मुख मंडल नहीं देखा था अर्थात् ऐसा व्यक्ति तुम को धोका नहीं दे सकता। रात हुई तो एक व्यक्ति ऊँट का मूल्य और भोजन ले कर आया कहा—अल्लाह के रसूल ने तुम्हारे लिये भोजन और ऊँट का मूल्य भेजा है। दूसरे दिन प्रातः हम लोगों ने मदीना नगर में प्रवेश किया तो आप मस्जिद में भाषण कर रहे थे, एक मुसल्मान हमें देख कर उठा और कहा ऐ अल्लाह के रसूल! उन लोगों के पूर्वजों ने हमारे गोत्र के एक व्यक्ति को मार डाला था, उसके बदले में उनके एक आदमी को क़त्ल करा दिया जाये। आपने फ़र्माया—बाप का बदला बेटे से नहीं लिया जा सकता। (सीरतुन्नबी जिल्द २ पृष्ठ ३०३ दार कुतनी से)

मक्का का कुरेश गोत्र अरब में सबसे अधिक प्रतिष्ठावान था। स्वयं महा ईश-दूत (स०) इसी गोत्र से थे। एकबार इसी गोत्र की एक स्त्री ने जिसका नाम फ़ातिमा था चोरी की, इस्लामी नियम के अनुसार चोरी की सज़ा यह है कि चोर का हाथ काट दिया जाय, फ़ातिमा के परिवार वालों के लिये यह बात बड़े अपमान की थी, इसलिये उन्होंने चाहा कि यह मुआमला दब जाये, महा ईश-दूत (स०) के एक सहाबी हज़रत उसामा (रज़ि०) थे जिन को आप ने गोद में खिलाया था और पुत्र के समान उनसे स्नेह करते थे लोगों ने उन्हीं को महा ईश-दूत की सेवा में भेजा। उनकी प्रार्थना पर महा ईश-दूत (स०) ने क्रुद्ध होकर फ़रमाया—इसराईल वंश (यहूदी) इसीसे पतन ग्रस्त हुये कि वह अपनी जाति के निर्धनों को तो सज़ा देते थे और धनवानों को छोड़ देते थे। यदि मुहम्मद की पुत्री फ़ातिमा भी चोरी करती तो उसका भी हाथ काटा जाता।

महा ईश-दूत की इसी न्याय शीलता का प्रभाव था कि यहूदी महा ईश-दूत (स०) के साथ शत्रुता रखते हुये भी अपने मुक़दमे महा ईश-दूत (स०) के ही पास लाते और आप उनके धर्म के अनुसार फ़ैसले कर देते थे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनम्रता और सरलता

महा ईश-दूत पर ईश्वर की सतत् दया हो, आप स्वभाव ही से विनम्र तथा सरल थे। आप को कितनी महानता प्राप्त थी, और आप के अनुयायी आप से कितनी श्रद्धा रखते थे परन्तु आप इतने विनम्र और सरल थे कि सहाबा के साथ इस तरह मिल जुल कर बैठते कि कोई अपरिचित आदमी आप को पहचान न सकता, किसी मजलिस में जाते तो जहाँ जगह मिलती वहीं बैठ जाते, आपने अपने सम्मान के लिये लोगों को खड़ा होने से मना कर दिया था। एक बार एक श्रद्धालु व्यक्ति ने आप को इस प्रकार सम्बोधित किया—"ऐ हमारे स्वामी और हमारे स्वामी के पुत्र! और ऐ हममें सर्वोत्तम और हममें सर्वोत्तम के पुत्र!" आप नें फ़रमाया—"लोगों सन्यम ग्रहण करो, शैतान तुम्हें गिरा न दे, मैं अब्दुल्ला का पुत्र मुहम्मद तथा अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल हूँ अल्लाह ने मुझको जो प्रतिष्ठा प्रदान की है तुम मुझे उससे अधिक न बढ़ाओ।" (सीरतुन्नबी जिल्द २ मुस्लिम से)

हज़रत अनस (रज़ि०) कहते हैं कि अगर कोई जौ की रोटी और बूदार चर्बी से भी आप की दावत करता तो आप उसे क़बूल कर लेते, यही हज़रत अनस (रज़ि०) कहते हैं कि आप फ़रमाया करते थे कि अगर कोई बकरी के पाये भी उपहार में भेजे तो मैं उसे ग्रहण कर लूँगा, और यदि उसकी दावत करे तो मैं उसे भी कबूल कर लूँगा। (शमाइले तिर्मिज़ी)

एकबार एक व्यक्ति महा ईश-दूत (स०) से मिलने आया और आपके प्रताप से प्रभावित होकर काँपने लगा, आप ने फ़रमाया—"घबराओ नहीं मैं कोई फ़रिश्ता नहीं हूँ, क़ुरैश गोत्र की एक स्त्री का पुत्र हूँ जो सूखा गोश्त पकाकर खाया करती थी। (शमाइले तिर्मिज़ी)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप उकड़ूँ बैठकर भोजन करते, कहते मैं अल्लाह का दास हूँ दासों की तरह खाता और दासों ही की तरह बैठता हूँ।

एक व्यक्ति ने महा ईश-दूत (स०) की धर्म पत्नी हज़रत आइशा (रज़ि०) से पूछा कि महा ईश-दूत घर में क्या-क्या करते थे? उन्होंने कहा घर के हर प्रकार के काम-काज करते, अपने कपड़ों में स्वयं पेवंद लगाते, घर में झाड़ू देते, दूध दूहते, बाज़ार से सौदा ख़रीद लाते, जूती फट जाती तो उसे गाँठ लेते, पानी के डोल में टाँके लगा देते, ऊँट को अपने हाथ से बाँधते, उसको चारा देते और दास के साथ मिलकर आटा गूँधते। (सीरतुन्नबी जिल्द २ पृष्ठ ३४० बुख़ारी से)

महा ईश-दूत का जो व्यवहार घर में था वही बाहर भी था। एक सफ़र में सहाबा ने बकरी ज़बह की और उस के पकाने के लिये आपस में काम बाँट लिये—महा ईश-दूत (स०) ने फ़रमाया जंगल से लकड़ियाँ मैं लाऊँगा। सहाबा ने चाहा कि यह काम भी वह स्वयं कर लें परन्तु महा ईश-दूत (स०) ने फ़रमाया—"मैं अपने लिये कोई प्रधानता पसंद नहीं करता", इसी प्रकार एक सफ़र में आप की चप्पल का तस्मा टूट गया आप उसको टाँकने लगे तो एक सहाबी ने निवेदन किया कि मैं टाँक दूँ, आप ने फ़रमाया यह अपनी बड़ाई जताना है और यह मुझे पसंद नहीं (सीरतुन्नबी जिल्द २ पृष्ठ ३४० ज़ुरक़ानी से)

बद्र के युद्ध में मुसलमानों के पास सवारी की इतनी कमी थी कि तीन तीन आदमियों के बीच में एक ऊँट था, लोग बारी बारी सवारी पर और पैदल चलते थे, सहाबा ने निवेदन किया कि आप सवारी पर चलें। आप की बारी पर हम पैदल चलेंगे आप ने फ़रमाया न तुम मुझसे अधिक चल सकते हो और न मुझको पुण्य की तुम से कम आवश्यकता है (सीरतुन्नबी जिल्द २)

सहाबा महा ईश-दूत (स०) की महानता से भली भाँति परिचित थे उस पर आप की इस विनम्रता और सरलता ने आप के सम्मान

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और प्रतिष्ठा के साथ आपके प्रेम से सहाबा के हृदय को परिपूर्ण कर दिया था।

महा ईश-दूत की सरलता के विषय में पाश्चात विद्वानों के उद्गार भी देख लीजिये—प्रसिद्ध अंगरेज़ साहित्यक कारलायल (Thomas carlyle) लिखता है—

"आपका घर साधारण तथा दीन लोगों के समान था, आपका साधारण भोजन जौ की रोटी थी और जल, अधिकतर आप के घर में महीनों चूल्हे में आग नहीं जलती थी, आपकी जीवनी लेखक बड़े गौरव के साथ वर्णन करते हैं कि आप अपने हाथ से जूते गांठ लेते और कपड़ों में पेवंद लगा लिया करते फिर भी किसी मुकुटधारी सम्राट-का इस प्रकार आज्ञा पालन नहीं किया गया जिस प्रकार उस व्यक्ति का जिसके कपड़े ख़ुद उसके हाथ के सिले होते।"

संसार प्रसिद्ध इतिहासकार एडवर्ड गिब्बन (Edward Gibbn) लिखता है—

"अपनी सांसारिक शक्ति के उत्थान काल में भी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पवित्र आत्मा ने सम्राटों के समान आन बान को अपने लिये उचित न समझा, ईश्वर का संदेशवाहक घर के छोटे मोटे काम स्वयंम करता, आग जलाता, झाड़ू देता, भेड़ों का दूध दूहता और अपने कम्बल तथा जूतों की मरम्मत ख़ुद कर लिया करता, संसार त्यागी ईसाइयों से घृणा करते हुये भी आप एक सीधे सादे अरब और सिपाही के समान साधारण भोजन किया करते थे"।

जर्मन ग्रन्थकार गुस्ताफ़ वायल (Gustaf weil) लिखता है—

"मुहम्मद (स्व०) अपनी जाति में एक प्रकाश समान थे, आप का आचरण शुद्ध और स्वच्छ था, वस्त्र तथा भोजन में अनोखी सरलता थी, स्वभाव इतना सरल और सादा था कि आप अपने साथियों से कोई मान सम्मान स्वीकार न करते थे, न दासों से कोई ऐसा काम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेते थे जो स्वयं न करते थे, आप बाज़ार से सौदा सुलुफ़ ख़ुद लाते थे, घर में कपड़ों में पेवन्द लगाते, बकरी का दूध दूहते, हर व्यक्ति हर समय आप तक पहुँच सकता था, आप रोगियों का हाल पूछने जाते, हर एक से सहानुभूति रखते, आपकी दानशीलता की सीमा न थी"।

वाशिंगटन इर्विंग (Washington Irving) लिखता है—

"अपनी अत्यन्त शक्ति तथा प्रभुता के समय भी आपने अपने रहन सहन तथा आचार-व्यवहार में वही सरलता बनाये रक्खी जो विपत्ति और दुर्बलता के समय में आप की विशेषता थी, सम्राटों की सी आन बान तो दूर की बात है, अगर कभी किसी प्रधानता का व्यवहार किया जाता तो आप को वह भी नापसन्द था। (मक़ालाते सीरत पृष्ठ १५१ से १५४)

दृढ़ता और वीरता

इस विनम्रता और सरलता के साथ असत्य, अधर्म, अनाचार और अत्याचार के विरुद्ध महा ईश-दूत (स०) कितने दृढ़, कितने कठोर और कितने साहसी थे उसके विषय में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है, उसका विस्तारपूर्वक वर्णन इस पुस्तक के पहले भाग "महा ईश-दूत का जीवन परिचय" में देखा जा सकता है।

ईश-दूत पद पर नियुक्त होने के बाद आप केवल अकेले ऐसे क्रान्तिकारी उद्देश्य और उपदेश को लेकर उठ खड़े हुये जो देश और काल के विश्वास, भावना तथा आचार व्यवहार के सर्वथा विरुद्ध था।

मक्के के सरदारों ने सामुहिक रूप से महा ईश-दूत (स०) के चचा अबू तालिब को चुनौती दी कि या तो आप अपने भतीजे को उनके उपदेश से रोकिये या आइये हम लड़कर फ़ैसला कर लें, अबू तालिब का साहस छूट गया, उन्होंने महा ईश-दूत (स०) को बुलाकर परिस्थिति समझायी, कहा—"तुम मुझ पर इतना बोझ न डालो जिसको मैं सहन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न कर सकूँ, अपना उपदेश बन्द कर दो" आप ने पूर्ण दृढ़ता से उत्तर दिया—"चचा! अगर वह लोग अपनी शक्ति का ऐसा चमत्कार दिखाएं कि मेरे दायें हाथ पर सूरज और बाएं हाथ पर चाँद लाकर रख दें जब भी मैं अपने कर्तव्य का त्याग न करूँगा, या तो ईश्वर मुझे सफलता प्रदान करेगा या मैं इसमें प्राण दे दूँगा।"

इसके बाद इसी मक्के में महाईश दूत (स०) पर विपत्ति के कैसे कैसे पहाड़ टूटे, आप के प्राण लेने के प्रयत्न में कोई कसर न छोड़ी गयी, आप का बहिष्कार किया गया जो तीन साल तक जारी रहा, आपको देश, त्याग करना पड़ा, मदीने में आप का एक नया शत्रु दल, यहूदियों का पैदा हो गया। मक्का निवासियों और यहूदियों के साथ आप को कितने युद्ध करने पड़े, बद्र के युद्ध में मुसल्मान केवल ११३ थे जिनके पास न पर्याप्त सवारियाँ थी, न पर्याप्त हथियार थे, शत्रु सेना की संख्या एक हज़ार थी जो सब प्रकार के अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित थी, इसके आक्रमणों से मुसल्मानों के पांव उखड़ जाते तो महाईश दूत (स०) ही की छत्र छाया में शरण लेते, हज़रत अली (रज़ि) प्रसिद्ध योद्धा थे, कोई शत्रु उनके सामने से बचकर न जा सकता था, बड़े बड़े शत्रु योद्धाओं को उन्होंने तलवार के घाट उतार दिया था, वह कहते हैं कि बद्र के युद्ध में घमसान का रन पड़ा तो हम लोगों ने आप ही की आड़ में शरण ली, उस दिन शत्रु सेना से सबसे अधिक निकट आपही रहते थे।

इसी उहुद के युद्ध में मक्के का सर्दार उबय्य बिन खुल्फ़ घोड़ा दौड़ाता हुआ महाईश दूत के पास पहुंच गया, मुसल्मानों ने उसे रोकना चाहा तो आपने फ़र्माया–रोको, मत आने दो। महाईशदूत महाबली और महासाहसी ही न थे, महा दयावान भी थे, आपने अपने हाथ से कभी किसी को क़त्ल नहीं किया। उस समय भी आप खाली हाथ थे, उबय्य सामने आया तो आपने एक मुसल्मान का नेज़ा लेकर उसकी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नोक उबय्य की गर्दन में चुभो दी। वह चीख़ मार कर भागा, लोगों ने कहा–यह तो साधारण सा घाव है, तुम इतने भयभीत क्यों हो? उसने कहा—तुम नहीं जानते कि यह किसके हाथ का घाव है?

हज़रत अनस कहते हैं कि महामान्य सबसे अधिक साहसी थे, एक बार मदीने में शोर हुआ कि शत्रु आ गये, महा ईश दूत ने घोड़े पर ज़ीन कसे जाने का भी इन्तेज़ार न किया, नंगी पीठ पर सवार होकर सब से पहले निकल गये और वापस आकर सूचना दी कि आशंका की कोई बात नहीं है।

उहुद के युद्ध में मक्का निवासियों के मदीना पर चढ़ाई की सूचना पा कर महा ईश-दूत (स०) ने सहाबा से मंत्रणा की, अधिकतर लोगों ने राय दी कि नगर ही में सुरक्षित रह कर मोरचे बंदी की जाये, आप की स्वयं भी यही इच्छा थी परन्तु कुछ नव युवक सहाबा ने जो बद्र की लड़ाई में सम्मिलित न हो सके थे उत्साह वश आग्रह किया कि नगर से बाहर निकल कर शत्रु का सामना किया जाये। महाईश दूत घर में गये और कवच धारण कर के बाहर निकले। अब लोगों को पश्चाताप हुआ कि हमने महाईश दूत को आप की इच्छा के प्रतिकूल बाहर निकलने पर बाध्य किया। उन लोगों ने कहा यदि आप चाहें तो मदीना के अन्दर ही रह कर सामना किया जाए। महा ईश दूत ने फ़रमाया—"नहीं, पैग़म्बर के लिये यह बात शोभनीय नहीं कि वह अस्त्र शस्त्र धारण करने के बाद उसे उतार दें। (सीरतुन्नबी भाग १)

हुनैन के युद्ध में अधिकांश सेनानी मक्के के नये मुसल्मान थे, हवाज़िन गोत्र वाले धनुर्विद्या में बड़े प्रवीण थे, वह घाटी में छिपे बैठे थे, अचानक मुसल्मानों पर बाण वर्षा आरंभ कर दी मुसल्मानों की संख्या २२ हज़ार थी फिर भी वह अचानक आक्रमण से घबराकर तितर-बितर हो गये परन्तु महाईशदूत इस विकट परिस्थिति में भी अपने स्थान पर ही चट्टान के समान जमे रहे और बराबर लल्कारे जा रहे थे—"मैं ख़ुदा का सच्चा नबी हूँ। मैं अब्दुल मुत्तलिब का पुत्र हूँ।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हज़रत बराअ इस युद्ध में सम्मिलित थे, किसी ने उनसे पूछा कि क्या हुनैन के युद्ध में तुम भाग खड़े हुये थे ? उन्होंने कहा—हां, परन्तु मैं गवाही देता हुं कि रसूलुल्लाह अपने स्थान से नहीं हटे–ख़ुदा की कसम जब युद्ध का ज़ोर होता तो हम लोग आपही के पार्श्व में शरण लेते, वह सब से बड़ा योद्धा समझा जाता जो आप के साथ खड़ा होता।

(सीरतुन्नबी भाग २ पृष्ठ ३४२ से ३४५ तक)

महा ईश दूत की दृढ़ता से ही इस युद्ध में पूर्ण विजय हुयी।

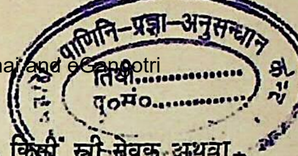
क्षमाशीलता और दयालुता

महाईश दूत पर ईश्वर की असीम कृपा हो आप ने परिस्थिति के अनुसार शत्रुओं और अत्याचारियों से युद्ध भी किया और न्याय की स्थापना के लिये अपराधियों को दंड भी दिया, कर्तव्य पालन के लिये यह अनिवार्य था, परन्तु आप अपने स्वभाव से सर्वथा क्षमाशील और दयालु थे, स्वयं ईश्वर ने मान्य क़ुर्आन में आप के प्रति कहा है— वमा अर्सल्नाक इल्ला रहमतल्लिल्आलमीन्। अर्थात् ऐ रसूल हमने तुम को सर्व संसार के लिये दया बनाकर भेजा है" आप किसी एक ही वर्ग के लिये दयालु न थे, बालकों के लिये दयालु थे, बूढ़ों के लिये दयालु थे, स्त्रियों के लिये दयालु थे, दास दास दासियों के लिये दयालु थे, अनाथों के लिए दयालु थे, दीन हीनों के लिये दयालु थे, मित्रों और सम्बन्धियों के लिए दयालु और क्षमा शील थे, शत्रुओं के लिये भी दयालु और क्षमाशील थे, जानवरों के लिये भी दयालु थे, यदि इस विषय पर विस्तार के साथ लिखा जायें तो एक बड़ी पुस्तक तय्यार हो सकती है। आपका पूरा जीवन क्षमा और दया की घटनाओं से भरा हुआ है महाईश दूत (स०) की धर्म पत्नी हज़रत आइशा (रजि०) आपके स्वभाव का वर्णन करते हुये कहती हैं—

"किसी को भला बुरा कहने की आपकी आदत न थी। आप बुराई करने वालों के साथ भी बुराई नहीं करते थे बल्कि उनको क्षमा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कर दिया करते थे। आप ने किसी दास दासी, किसी स्त्री सेवक अथवा किसी जानवर को अपने हाथ से नह मारा और न अपने प्रति किसी अपराध का किसी शत्रु से बदला लिया" जिस समय मक्का निवासी महाईश दूत (स.) पर निरंतर अत्याचार कर रहे थे एक सहाबी ने जिनका नाम खब्बाब था और जो मक्का निवासियों के द्वारा बड़े बड़े कष्ट भोग चुके थे महा ईश दूत (स.) से निवेदन किया—ऐ अल्लाह के रसूल! शत्रुओं के प्रति बद्दुआ कीजिये। यह सुन कर गुस्सा से आपका मुख मंडल लाल हो गया। एक बार कई सहाबियों ने मिल कर आप से यही निवेदन किया। आप ने फ़रमाया–मैं संसार के लिये लानत करने वाला बना कर नहीं भेजा गया हूँ। दया करने वाला बना कर भेजा गया हूँ।

महा ईशदूत (स.) के मक्का त्याग से पहले मक्का निवासियों ने आप के परिवार और मुसलमान सम्बन्धियों से ऐसा कठोर असहयोग किया कि मिलना जुलना और लेन देन सब बन्द करके उनका नगर में रहना कठिन कर दिया। महा ईशदूत के चचा अबूतालिब सबको लेकर पहाड़ की एक घाटी में शरण लेने के लिये बाध्य हो गये। यह असहयोग तीन साल तक जारी रहा, नगर से एक दाना घाटी में जाने न पाता था, साथ गई भोजन सामाग्री समात हो गयी, फ़ाक़ा होने लगा लोगों को वृक्षों के पत्ते खाखा कर जीवन की रक्षा करनी पड़ी। बालक भूक से रोते चिल्लाते। निर्दयों को उनपर भी दया न आती था, तीन साल बाद असहयोग समाप्त हुआ। उनकी निर्दयता के फल स्वरुप मक्के में ऐसा सूखा पड़ा कि नगर निवासी मरे हुये पशु खाने और हड्डी चबाने लगे। शत्रुओं के सरदार अबू सुफ़ियान ने महा ईश-दूत (स०) की सेवा में उपस्थिति होकर निवेदन किया कि "मुहम्मद! तुम्हारी जाति मर रही है। ईश्वर से प्रार्थना करो कि यह विपत्ति दूर हो।" आपने प्रार्थना की, और विपत्ति दूर हो गयी।

महा ईश-दूत की क्षमा शीलता और दयालुता का दिव्य परिचय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस समय मिला जब मक्का नगर पर महा ईश-दूत (स०) का अधिकार हो गया।

नगर निवासी महा ईश-दूत के सम्मुख उपस्थित हैं। यह वह अपराधी हैं, जो तेरह साल तक इस नगर में महा ईश-दूत (स०) और मुसलमानों पर घोर अत्याचार करते रहे और अन्त में महा ईश-दूत की हत्या करने पर उतारु हो गये थे। मक्का त्याग के बाद मक्का विजय तक युद्ध करके महा ईश-दूत (स०) के जीवन को समाप्त कर देने का प्रयत्न करते रहे, महा ईश-दूत (स०) इन में से एक एक से परिचित हैं, और जानते हैं कि किसने क्या किया है। आप उन से पूछते हैं—तुम्हारा क्या विचार हैं कि आज तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार होगा ? मक्का निवासी जवाब देते हैं—हम तो आपके विषय में यही जानते हैं कि आप बड़े दयावान भाई के दयावान पुत्र हैं।

तनिक विचार कीजिए बीस इक्कीस साल तक शत्रुता की हद कर देने वाले शत्रु, महा ईश-दूत (स०) के प्रति यह कैसी गवाही दे रहे हैं ?

यह उनका कोई बनावटी उत्तर न था, यह उनकी आत्मा में दबे हुये भाव की आवाज़ थी। महा ईश-दूत (स०) ने फ़रमाया—"ला तस्रीब अलैकुमु ल्यौम इज्हबू-अन्तुमुत्तुलक़ाअ।"

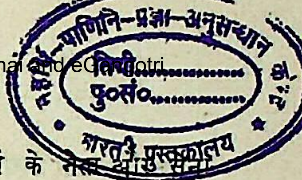
अर्थात् आज तुम्हारे प्रति हमारी क्षमाशीलता और दया का दिन है अतः आज तुम पर कोई दोष नहीं तुम मुक्त हो।

क्षमा दान तथा मुक्ति दान वह भी इतना सम्मान जनक ! महा ईश-दूत (स०) के सिवा किस का हृदय इतना विशाल होगा ? इतिहास के किस व्यक्ति ने ऐसी दयालुता का परिचय दिया ?

यह तो मक्का निवासियों के प्रति महा ईश-दूत (स०) की सामूहिक क्षमा और दया का वर्णन था, संक्षेप में यह भी देख लीजिए कि इनमें कैसे-कैसे प्रमुख शत्रु थें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



१—अबू सुफ़ियान, जो मक्का निवासियों के नेता और सेना संचालक थे।

२—हिन्दा, अबू सुफ़ियान की पत्नी, जिसने उहुद के युद्ध में महा ईश-दूत (स०) के प्रमुख सहायक और प्रिय चचा हज़रत हमज़ा (र०) को शहीद कराया था और उनका कलेजा निकाल कर चबाया था।

३—वहशी, जिसने हज़रत हमज़ा को शहीद किया था।

४—उमैर बिन वहब, जिसने पुरस्कार की लालच से महा ईश-दूत (स०) की हत्या का प्रयास किया था।

५—मक्के का सरदार सफ़्वान बिन उमय्या, जिसने पुरस्कार का लालच देकर उमैर बिन वहब को महा ईश-दूत (स०) की हत्या पर नियुक्त किया था।

६—अक्रमा, मक्का के सर्दार अबू जहल के पुत्र थे, जो महा ईश-दूत (स०) का कट्टर शत्रु था, और अक्रमा भी पिता ही के समान महा ईश-दूत के शत्रु थे। वह प्राण के भय से यमन भाग गये थे। उनकी पत्नी जो मुसलमान हो चुकी थी; उनको समझा बुझाकर यमन से मक्का ले आईं। महा ईश-दूत ने सहर्ष उनका अभिवादन किया, और उनको लौट आने पर बधाई दी।

७—हिबार बिन अस्वद, महा ईश-दूत मक्का त्याग करके मदीना चले गये थे, आपकी पुत्री हज़रत जैनब (रजि०) अपने पति के साथ जो अभी मुसलमान नहीं हुए थे, मक्के में रह गई थीं, मदीना जाने लगीं तो मक्के के शत्रुओं ने उनको रोकने का प्रयत्न किया। हज़रत जैनब हिबार के ऊँट पर सवार थीं। उसने जान बूझकर उन्हें ऊँट से नीचे गिरा दिया। वह गर्भवती थी। गर्भ नष्ट हो गया। हिबार भागकर ईरान जाना चाहता था परन्तु महा ईश-दूत (स०) की क्षमा शीलता की आशा पर उसने आप की सेवा में उपस्थित होकर क्षमा याचना की।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपने क्षमा कर दिया, उसने सहर्ष इस्लाम ग्रहण कर लिया।

(सीरतुन्नबी भाग २ पृष्ठ ३६०, ३६१, ३६२)

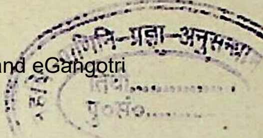
मक्का निवासियों के बाद महा ईश-दूत (स०) के सबसे बड़े शत्रु ताएफ़ निवासी थे। उन्होंने महा ईश-दूत (स०) का कितना अपमान किया था और कितना कष्ट दिया था इसका वर्णन इस पुस्तक के पहले भाग में हो चुका है। उस समय भी खुदा का फ़रिश्ता आया था और निवेदन किया था कि आज्ञा हो तो ताएफ़ निवासियों पर पहाड़ उलट दिया जाए। महा ईश-दूत (स०) ने उत्तर दिया था—नहीं, सम्भव है उनकी संतान में कोई इस्लाम ग्रहण करने वाला हो। मक्का विजय के बाद भी ताएफ़ निवासियों ने युद्ध की चुनौती दी, युद्ध हो रहा था। ताएफ़ निवासी अन्धा धुंध मुसल्मानों पर आक्रमण कर रहे थे और मुसल्मानों के शव पर शव गिर रहे थे, सहाबा ने निवेदन किया ऐ अल्लाह के रसूल! ताएफ़ निवासियों के लिए बद दुआ कीजिए आप ने हाथ उठाए और बद दुआ की जगह दुआ की—"ऐ अल्लाह! ताएफ़ वालों को सुबुद्धि दे कि वह सत्य को ग्रहण करें और मित्रतापूर्ण मदीने आएँ।" अंततः ताएफ़ निवासी बाध्य हो कर मदीना आए और महा ईश-दूत (स०) ने सम्मान पूर्वक उनको मस्जिद में स्थान दिया और वह मुसल्मान हो गए।

यमामा निवासी हनीफा गोत्र अंत समय तक महा ईश-दूत (स०) की शत्रुता पर दृढ़ रहा। इस गोत्र का एक सरदार समामा बिन ग्रासाल मुसलमानों के हाथ लग गया और वह उसको बन्दी बनाकर मदीना लाए। महा ईश-दूत (स०) को सूचना दी गई, आपने हुक्म दिया कि इसको मस्जिद के खम्भे में बांध दिया जाये। फिर आप मस्जिद में आए और समामा से पूछा, क्या कहते हो?

उसने उत्तर दिया—ऐ मुहम्मद! अगर तुम मुझको क़त्ल कर दोगे तो एक खूनी को क़त्ल करोगे और यदि क्षमा कर दोगे तो एक कृतज्ञ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



को क्षमा करोगे और यदि तुम प्राण के बदले में धन चाहो तो मांगो देने को प्रस्तुत हूँ ! "

समामा से दूसरे दिन भी यही प्रश्नोत्तर हुआ, तीसरे दिन भी जब उसने यही उत्तर दिया तो महा ईश-दूत (स०) ने उसे मुक्त कर दिया। आपकी दयालुता और क्षमा शीलता से वह इतना प्रभावित हुआ कि एक वृक्ष की आड़ में जाकर स्नान किया और मस्जिद में आकर इस्लाम ग्रहण कर लिया और कहा ! ऐ अल्लाह के रसूल; संसार में आप से अधिक मेरी दृष्टि में कोई अप्रिय न था और 'अब आप से अधिक मेरी दृष्टि में कोई प्रिय नहीं। इस्लाम धर्म से अधिक मेरे निकट कोई धर्म बुरा न था अब उससे अधिक कोई धर्म अच्छा नहीं; तथा आप के नगर से कोई नगर अधिक नापसन्द न था और अब उससे अधिक कोई नगर पसन्द नहीं।

सीरतुन्नबी भाग २ पृष्ठ ३६३

इस त्याग, बलिदान, धैर्य, सुहृदयता दयालुता, तथा क्षमा शीलता से इस्लाम फैला ! मनुष्य हृदय के बदलने से धर्म बदलता है और हृदय तलवार से नहीं हृदय से बदलता है।

यह संक्षिप्त वर्णन है महा ईश-दूत (स०) की क्षमा शीलता और दयालुता का। जब आप का ऐसे शत्रुवों के साथ ऐसा दया पूर्ण व्यवहार था तो साधारण शत्रुओं के साथ कैसा व्यवहार रहा होगा, इसका सहज ही अनुमान किया जा सकता है।

महा ईश-दूत (स०) जानवरों का दुखी होना भी सहन न कर सकते थे। अरब के लोग जानवरों को लड़ाते थे और उनको बांध कर बाग मारने का अभ्यास करते थे। महा ईश-दूत (स०) ने उसकी मनाही कर दी थी। लोग जानवरों के चेहरे दाग दिया करते थे, आपने आज्ञा दी कि आवश्यकतानुसार जानवरों को दाग़ा जाए तो शरीर के नर्म भाग को न दाग़ा जाए। एक बार सफ़र में महा ईश-दूत (स०) ने जहाँ पड़ाव

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया था वहाँ चिड़ियों ने अण्डा दे दिया था, एक सहाबी ने वह अण्डा उठा लिया चिड़िया व्याकुल हो कर पर मारने लगी। महा ईश-दूत (स०) ने अण्डे को उसकी जगह पर रखवा दिया।

एक बार एक सहाबी चादर में चिड़ियों के बच्चे छिपाए महा ईश-दूत (स०) की सेवा में उपस्थित हुए। आपने फ़रमाया—जाओ, जहां से इन बच्चों को उठाया है वहीं रख आओ।

एक बार ऊँट को देखा भूख से उसकी पीठ और पेट एक हो गए थे, फ़रमाया—इन जानवरों के बारे में खुदा से डरो।

एक बार एक। अंसारी के बाग़ में गए। वहां एक ऊँट था जो आप को देखकर बलबलाया आपने स्नेह से उसके ऊपर हाथ फेरा और उसके मालिक से फ़रमाया—तुम इस जानवर के मामले में खुदा से डरते नहीं?

अब आगे दास दासियों के प्रति महा ईश-दूत (स०) का सौहार्द्र-पूर्ण व्यवहार देखिए।

दासों पर दया

अरब देश में सबसे अधिक दयनीय दशा दासों की थी, परन्तु उनके लिये किसी के हृदय में दया न थी, वह पशुओं के समान बेचे खरीदे जाते थे, पशुओं ही के समान उनको मारा पीटा जाता और उनसे काम लिया जाता। अरब के अतिरिक्त दूसरे देशों में भी दास प्रथा प्रचलित थी। संसार में कहीं कोई न था जो दासों की सहानुभूति में आवाज़ उठाता। दासों की मुक्ति के विषय में अमरीका का बड़ा गुन गाया जाता है। महा ईश-दूत के समय में अमरीका था ही नहीं। महा ईश-दूत स्वभाव से ही दयालु थे आप ने ईश-दूतत्व से पहले ही दासों के प्रति अपनी दया और सहानुभूति का अनुपम आदर्श उप-स्थिति किया और अपने दास हज़रत ज़ैद बिन हारिसा (रजि०) से ऐसा प्रेम किया कि जब उनके पिता को सूचना मिली कि वह महा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश-दूत के पास हैं तो वह आये और आप से कहा कि आप जो मूल्य चाहें ले लें और मेरे पुत्र को मुझे दे दें। आपने कहा मूल्य की आवश्यकता नहीं, वह स्वतंत्र है, चाहें तुम्हारे साथ जायें, चाहे मेरे पास रहें। हज़रत ज़ैद ने पिता के साथ जाना अस्वीकार कर दिया। और महा ईश-दूत ने उनको अपना पुत्र बना लिया। यद्यपि आगे चलकर ईश्वरीय आदेश के अनुसार मुँह बोले पुत्र की प्रथा समाप्त हो गयी परन्तु हज़रत ज़ैद पहले ही के समान महा ईश-दूत के परिवार के एक प्रिय सदस्य बने रहे, हज़रत ज़ैद के पुत्र हज़रत उसामा (रज़ि०) से आप इतना प्रेम करते थे कि उनको गोद में लेकर खिलाते, स्नेह से कहते उसामा पुत्री होता तो मैं उसे गहने पहनाता, अपने हाथ से उनकी नाक साफ करते, हज़रत ज़ैद और हज़रत उसामा को बड़े-बड़े कुलीन सहाबा पर प्रतिष्ठा प्राप्त थी। हज़रत बिलाल (रज़ि०) मक्के के एक सरदार के दास थे और मुसलमान हो गये थे, सरदार इस्लाम का कट्टर शत्रु था। वह हज़रत बिलाल को असह्य यातनायें दिया करता था। अरब की धूप से तपती भूमि होती आप की गर्दन में रस्सी बाँधकर मक्के की गलियों में घसिटवाता। तपती रेत पर लेटाकर आप के सीने पर इतना भारी पत्थर रख देता कि आप हिल न सकते। हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) ने उनको ख़रीद कर महा ईश-दूत को अर्पित कर दिया। महा ईश-दूत ने उनको दासता से मुक्त करके इतनी प्रतिष्ठा प्रदान की कि उनको अपने घर के प्राणियों में सम्मिलित कर लिया, आप के घरेलू कार्यों के वही प्रबन्धक थे। महा ईश-दूत की जाति कुरैश को सारे अरब देश में सम्मान प्राप्त था और हज़रत बिलाल को उस जाति के सहाबा भी सम्मान की दृष्टि से देखते थे और उनका आदर करते थे। हज़रत बिलाल का देहान्त हुआ तो हज़रत उमर (रज़ि०) ने जो प्रमुख सहाबी थे और आगे चलकर महा ईश-दूत के दूसरे ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) हुए, बड़े शोक के साथ कहा हमारे सरदार बिलाल का देहान्त हो गया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

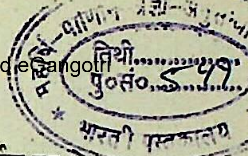
हज़रत सलमान (रज़ि०) ईरान के अग्नि पूजक सम्प्रदाय के पंडा के पुत्र थे, सत्य धर्म की खोज में ईरान से निकले वर्षों तक देश-देश, नगर-नगर मारे-मारे फिरे, अन्त में दास की अवस्था में मदीने पहुँचे और मुसलमान हो गये। महा ईश-दूत के प्रयास से दासता से मुक्त हुये। आप ने उनको भी बड़ी प्रतिष्ठा प्रदान की। महा ईश-दूत के बाद कितने ही युद्धों में सेनापति के पद पर नियुक्त हुये। ईरान की विजय के बाद उसकी राजधानी मदाइन के राज्यपाल भी थे। बड़े सन्त व्यक्ति थे। इस पद पर रहकर भी संयासी के समान जीवन व्यतीत करते थे। महा ईश-दूत स्वयं दासों के साथ जैसा सम्मान पूर्वक व्यवहार करते थे उसी के अनुसार दूसरों को भी आदेश देते थे। यदि कोई दासों का अपमान करता तो महा ईश-दूत उसपर रुष्ट होते। हज़रत अबूज़र (रज़ि०) बड़े प्रमुख सहाबी थे, उन्होंने एक दास को अपशब्द कहा, उसने महा ईश-दूत से शिकायत की आपने हज़रत अबूज़र को डाँटा, फ़रमाया, तुममें अब तक जाहिलीयत बाकी है। दास तुम्हारे भाई हैं। अल्लाह ने तुमको उनपर अधिकार दिया है। यदि वह तुम्हारे मन के अनुकूल न हों तो उन्हें बेच दो, उनको दुख न दिया करो। जो स्वयं खाओ उनको खिलाओ, जो स्वयं पहनो उनको पहनाओ। उनको इतना काम न दो जो वह कर न सकें। यदि अधिक काम दो तो स्वयं उनकी सहायता करो।

हज़रत अबू मसऊद भी प्रमुख सहाबी थे, वह अपने दास को मार रहे थे। महा ईश-दूत ने देखा तो डाँटा—"अबू मसऊद! तुम को इस दास पर जितना अधिकार है ईश्वर को तुमपर इससे भी अधिक अधिकार है।" हज़रत अबू मसऊद के लिये महा ईश-दूत की यह डाँट न थी वज्रपात था, कहा—"ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने ईश्वर की प्रसन्नता के लिये इस दास को मुक्त कर दिया।"

महा ईश-दूत ने फ़रमाया—"यदि तुम उसको मुक्त न कर देते तो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



तुमको नरक अग्नि छू लेती।" दासों के प्रति महा ईश-दूत के इस दया भाव और व्यवहार ने सहाबा को ऐसा प्रभावित किया कि हज़रत उसमान (रज़ि०) जो बड़े धनवान, दानशील, महा ईश-दूत के दामाद, और तीसरे ख़लीफ़ा थे एक बार क्रोध में अपने दास का कान ऐंठ दिया तो उसी समय उनकी चेतना जागरित हुई कि यह तो बुरा काम हो गया। दास से कहा तुम भी मेरा कान ऐंठो। दास ने कान पर हाथ धर दिया। वह बोले—"नहीं इसी तरह कड़ाई से ऐंठो जैसे मैंने ऐंठा था, परलोक में ईश्वर इसकी पूछ करे इससे अच्छा है कि आज ही इसका बदला हो जाय।"

दास महा ईश-दूत को श्रद्धापूर्वक भोजन का निमंत्रण देते। दास दास ही तो होते, रूखा सूखा महा ईश-दूत के सम्मुख रख देते। महा ईश-दूत प्रसन्नता पूर्वक उसी भोजन को ग्रहण कर लेते। दास और दासियां अपनी अपनी आवश्यकतायें लेकर महा ईश-दूत की सेवा में आतीं, आप सहर्ष उनकी आवश्यकताएँ पूरी कर देते। अरब में शताब्दियों से दास प्रथा प्रचलित थी। समाज में दास दासियों का इतना समावेश हो गया था कि दास प्रथा के अवैध ठहरा देने से समाज व्यवस्था ही अस्त व्यस्त हो जाती, इसलिये दास प्रथा अवैध तो नहीं ठहरायी गयी परन्तु दास-दासियों की मुक्ति को एक पुण्य कार्य ठहरा दिया गया और उनकी मुक्ति के प्रति बहुत से मार्ग खोल दिये गये और समाज में ऐसी भावना उत्पन्न कर दी गयी कि लोग उनको परिवार के सदस्य के समान मानने लगे और आगे चलकर तो दास सन्तान में इस्लाम धर्म के बड़े-बड़े ज्ञाता, शास्त्री और धर्म नेता हो गये जो मुसलमानों में बड़ी श्रद्धा से याद किये जाते हैं।

—::o::—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो अन्तिम शब्द

मेरा उद्देश्य महा ईश-दूत हज़रत मुहम्मद (स०) का विस्तृत जीवन चरित्र लिखना नहीं, केवल आप की जीवनी का परिचय कराना है और जितना लिखा जा चुका है वह इस उद्देश्य के लिये पर्याप्त है। अन्त में ग़ैर मुस्लिम बन्धुओं से निवेदन है कि वह इस बात से अपने हृदय और मस्तिष्क को शुद्ध करके कि महा ईश-दूत (स०) भारतीय थे कि अभारतीय, अपने थे या पराये शुद्ध मन और हृदय से विचार करें कि वह कैसे थे,? तथा उनका गुण और स्वभाव कैसा था ? आचार और व्यवहार कैसा था ? बुद्धि और ज्ञान तथा न्याय की मांग क्या है ? हम उनको क्या मानें और कैसा मानें ? यदि हम सूरज को सूरज और चाँद को चाँद न मानें, उनकी ओर से मुँह फेर लें, आँखें बन्द कर लें, उनके प्रकाश से लाभ न उठाएँ, तो इसमें सूरज और चाँद की तो कोई हानि न होगी, हानि तो अपनी ही होगी। ईश्वर भारत ही का नहीं सारे संसार का है भारत निवासियों ही का नहीं सारी मनुष्य जाति का है, ईश्वरीय शिक्षा और ज्ञान तथा उसकी दया और कृपा के अधिकारी भारत निवासी ही नहीं सारी मनुष्य जाति है, हम यूरोप और अमेरिका की विद्या और ज्ञान से लाभ उठा रहे हैं, उनकी दवाओं और यंत्रों से लाभ उठा रहे हैं, हमने यूरोप और अमेरिका से राजनीतिक सिद्धान्त भी लिए हैं, सभ्यता और संस्कृति के कितने अंशों को भी हमने ग्रहण कर रखा हैं, फिर यह बात बुद्धि संगत कैसे हो सकती है, कि हम हजरत मुहम्मद (स०) के ईश दूतत्व और श्री क़ुरआन को केवल इसलिये न मानें और उनसे लाभ न उठाएँ कि उनका अवतरण अरब देश में हुआ और उनका निरादर करें ? सोना और हीरा तो एक निधि है। वह तो हमें जहाँ से भी मिल जाये उसे आदर के साथ ग्रहण कर लेना चाहिये।

———

काशी मुद्रणालय, विश्वेश्वरगंज, वाराणसी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इस्लाम का परिचय

भारत में जिन पुस्तकों द्वारा इस्लाम को समझा गया है वह सर्वथा भ्रष्टतापूर्ण हैं उनमें से कुछ तो इस्लाम के ऐतिहासिक शत्रु अंग्रेजों की लिखी हुई हैं और कुछ भारत के ऐसे ही इस्लाम विरोधी विद्वानों की पुस्तकें हैं जिनमें इस्लाम का सर्वथा विकृत तथा घृणित रूप उपस्थित किया गया है।

इस पुस्तक में इस्लाम का वास्तविक रूप प्रस्तुत करते हुए प्रामाणिक आधारों द्वारा बताया गया है कि इस्लाम कितना प्राकृतिक कितना बौद्धिक कितना कल्याणकारी तथा कितना शुद्ध एकेश्वरवादी सत्य सनातन धर्म है और वह कैसा आदर्श मानव समाज उत्पन्न करता है। मूल्य २।)

इस्लाम क्या सिखाता है ?

इस पुस्तक में ऐसे विषयों की शिक्षा उपस्थित की गई है जिसकी वर्तमान समय में हमारे परिवार को समाज को और देश को विशेष रूप से आवश्यकता है और जिनके बिना हमारे देश की धार्मिकता, सभ्यता, सामाजिकता मानवता सब कुछ भ्रष्ट और पतन ग्रसत हो रहा है।

विषय सूची का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

ईश्वर भक्ति, मानवप्रेम, दयालुता, नम्रता, सहनशीलता, सत्य तथा वचनपालन, न्याय एवं अन्याय, भलाई फैलाना बुराई मिटाना, रिश्वत, व्यभिचार हराम माल खाने की बुराई। माता पिता, पति पत्नी, संतान, सगेसम्बन्धो, पड़ोसी एवं सर्वसाधारण के विषय में इस्लामी शिक्षा। मूल्य ५० पैसा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस्लाम और ग़ैरमुस्लिम विद्वान

इस पुस्तक में इङ्गलैंड, फ्रांस, जर्मनी, रूस, अमरीका, और हिन्दुस्तान के लगभग ५० ग़ैरमुस्लिम विद्वानों की पुस्तकों और व्याख्यानों से इस्लाम, पैगम्बरे इस्लाम और कुर्आन शरीफ की सत्यता और वास्तविकता प्रमाणित की गई है। और इस्लाम के विरोधियों की ओर से इस्लाम पर जितने आरोप लगाए गए हैं उन सबका उत्तर न्यायवादी ग़ैरमुस्लिम विद्वानों की रचनाओं से दिया गया है। अब तक ऐसी महान पुस्तक हिन्दी में तो क्या उर्दू में भी नहीं छपी। मूल्य २)७५

हज़रत मुहम्मद का जीवन चरित्र

यह हज़रत रसूलुल्लाह की सबसे विस्तृत जीवनी है। इस विषय पर इससे बड़ी पुस्तक हिन्दी में अब तक कोई नहीं प्रकाशित हुई।

इस पुस्तक में हज़रत मुहम्मद के पवित्र जीवन की समस्त घटनाओं और आदर्श सदाचरणों पर भली-भाँति प्रकाश डाला गया है यह पुस्तक इस योग्य है कि सभी ग़ैरमुस्लिम भाई ध्यान पूर्वक इसका अध्ययन करें। बड़ा साइज, मूल्य ५)

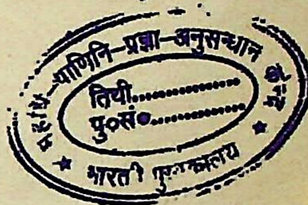
महाईश दूत का जीवन परिचय

इस पुस्तक में संक्षिप्त किन्तु अत्यन्त सुन्दर शैली में महाईश दूत हज़रत मुहम्मद का मनोरम जीवन परिचय कराया गया है। लेखक ने अपनी हार्दिक श्रद्धा और प्रेम को इस पुस्तक में समो दिया है अन्त में महाईश दूत के सम्बन्ध में ग़ैरमुस्लिम विद्वानों की सम्मतियाँ भी दी गई हैं। मूल्य ७५ पैसे

पताः—इस्लामी साहित्य सदन, रामनगर, वाराणसी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महत्वपूर्ण इस्ल

हिन्दी साहित्य में

इस्लाम की शिक्षा कितनी
कितनी सैद्धान्तिक कितनी मानव
कारी है यह जानने के लिये
अवश्य पढ़िये।

इस्लाम और गैर मुस्लिम विद्वान २।।।) इस्लाम का परिचय २) इस्लाम की शिक्षा १) पैगम्बर का आदर्श जीवन चरित्र ५) इस्लाम प्रवेशिका ३।) कुर्आन का परिचय १।।) कुर्आन का पहला पारा १) पवित्र कुर्आन २।।) हिन्दी अनुवाद कुर्आन शरीफ १०।।।) विश्व पथ प्रदर्शक ।-) सत्य धर्म ।=) शान्तिमार्ग ।-) इस्लाम और अज्ञान ।=) इस्लाम का एकेश्वर वाद =) इलान् धर्म परिवर्तन इस्लाम विरुद्ध ।=) इस्लामी पुस्तक १) इस्लामी शरीयत १।।।-) नबियों के हालात १।।=) कुर्आनी किस्से ।।) जगत गुरु १) नमाज ।।) इस्लाम का नैतिक दृष्टि कोण ।) जीवन मृत्यु के पश्चात =) इस्लाम की जीवन व्यवस्था ।।) कुर्आन और पैगम्बर ।) वर्तमान समस्याएं ।।।) बनाव बिगाड़ ।) सत्य की खोज ।।) मंजिल की ओर ।) इस्लाम और बर्थ कंट्रोल ।।।-) इस्लाम =) ईमान =) आखिरत ।-) अल्लाह के नबी ।=) प्यारे रसूल ।=) ईमान की हकीकत ।=) इस्लाम की हकीकत ।=) रोजा नमाज की हकीकत ।।=) जकात की हकीकत ।।=) हज की हकीकत ।।=) महाईश का जीवन परिचय ।।।) महाईश दूत का आदर्श सदाचरण ।।।) इस्लाम क्या सिखाता है ।।)

इस्लामी साहित्य सदन, रामनगर, वाराणसी।

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.